ISSN 2394-8485

मासिक

गुरमत ज्ञान

३/-

चैत्र-वैशाख संवत् नानकशाही ५५७ अप्रैल 2025 वर्ष १८ अंक ८

तख़्त श्री केसगढ़ साहिब,
श्री अनंदपुर साहिब

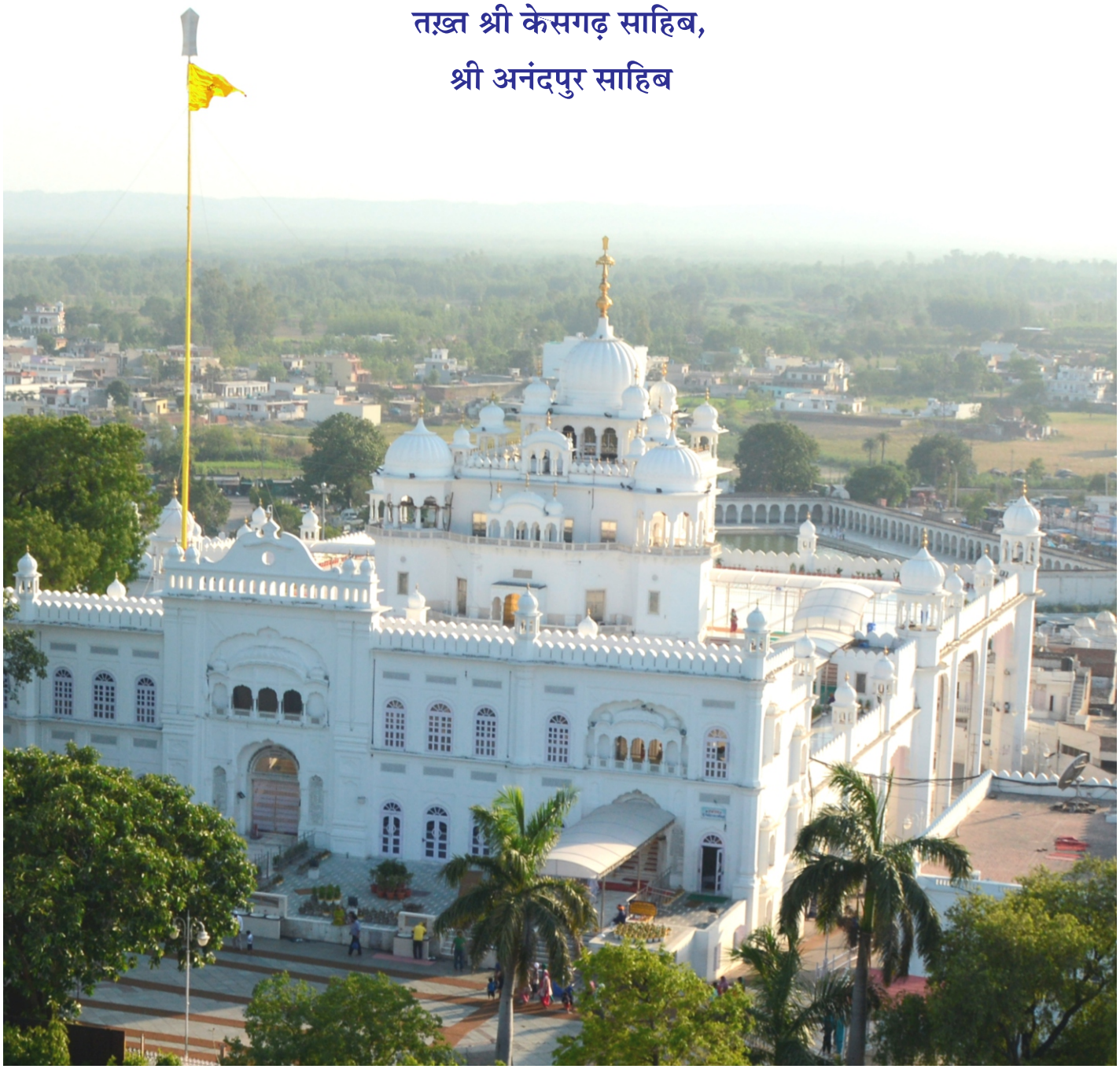

गुरुद्वारा बाबा बकाला साहिब,
जिला श्री अमृतसर साहिब

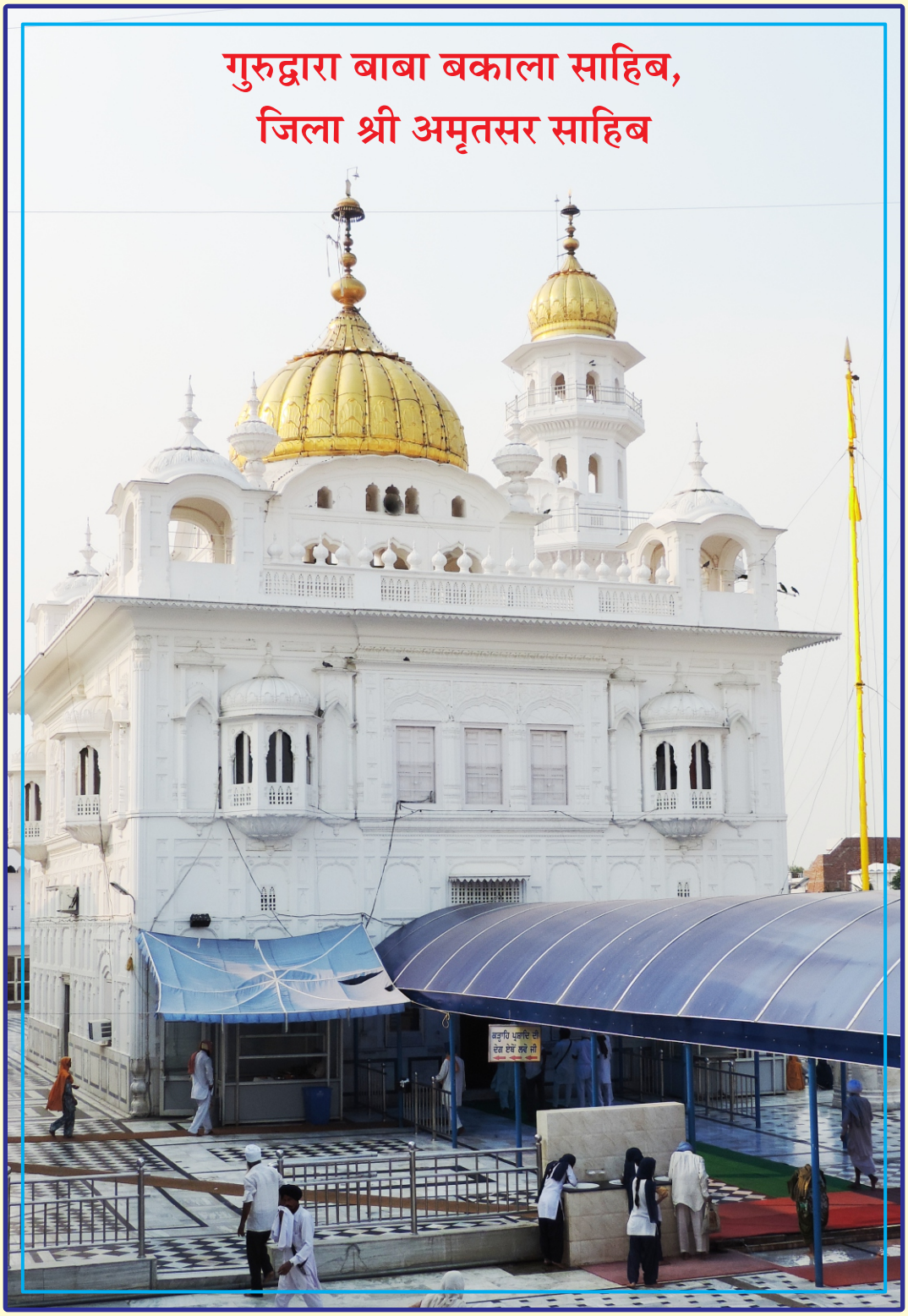

ISSN 2394-8485

ੴ सतिगुर प्रसादि॥

गुर गिआन अंजनु सचु नेत्री पाइआ॥
अंतरि चानणु अगिआनु अंधेरु गवाइआ॥

मासिक

गुरमत ज्ञान

चैत्र-वैशाख संवत् नानकशाही 557
वर्ष 18 अंक 8 अप्रैल 2025

संपादक : सतविंदर सिंघ
सहायक संपादक : जगजीत सिंघ

चंदा

सालाना (देश)	10 रुपये
आजीवन (देश)	100 रुपये
सालाना (विदेश)	250 रुपये
प्रति कापी	3 रुपये

चंदा भेजने का पता
सचिव, धर्म प्रचार कमेटी
(शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी)
श्री अमृतसर साहिब -143006
फोन : 0183-2553956-60
एक्सटेंशन नंबर
वितरण विभाग 303 संपादन विभाग 304
फैक्स : 0183-2553919
e-mail : gyan_gurmat@yahoo.com
website : www.sgpc.net

विषय-सूची

गुरबाणी विचार 4
संपादकीय 5
जीवोद्धार हेतु श्री गुरु अंगद साहिब का अनमोल सेवा-संकल्प 7
–डॉ. सत्येन्द्र पाल सिंघ
श्री गुरु अंगद देव जी को गुरुआई मिलने से संबंधित साखियाँ 12
–डॉ. कशमीर सिंघ 'नूर'
श्री गुरु तेग बहादर साहिब का प्रारंभिक जीवन-वृत्तांत 17
–डॉ. मनजीत कौर
भक्त धंना जी 20
–स. परमजीत सिंघ सुचिंतन
पैग़ाम-ए-बैसाखी : मानसिकता और ज़मीर की आज़ादी 24
–स. गुरचरनजीत सिंघ (लांबा)
नाम-अमृत . . . खंडे का अमृत 27
–डॉ. परमजीत कौर
जोशीमठ का गुरुद्वारा कैसे बना? 31
–डॉ. परमवीर सिंघ
हउमै दीरघ रोगु है दारू भी इसु माहि।। 34
–डॉ. श्याम सुंदर दीप्ति
सिक्ख धर्म में दसतार की महानता 36
–बीबी प्रकाश कौर
क्या आरएसएस ने मुसलिम लीग के दंगाकारियों से . . . 40
–स. जसकरन सिंघ
ख़बरनामा 48

गुरबाणी विचार

वैसाखु भला साखा वेस करे ॥
धन देखै हरि दुआरि आवहु दइआ करे ॥
घरि आउ पिआरे दुतर तारे तुधु बिनु अढु न मोलो ॥
कीमति कउण करे तुधु भावां देखि दिखावै ढोलो ॥
दूरि न जाना अंतरि माना हरि का महलु पछाना ॥
नानक वैसाखीं प्रभु पावै सुरति सबदि मनु माना ॥ ६ ॥ *(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ११०८)*

प्रथम पातशाह श्री गुरु नानक देव जी तुखारी राग में 'बारह माहा' नामक बाणी में वैशाख मास के प्रकृति-वर्णन के प्रसंग में जीव-स्त्री की प्रभु-मिलन की तड़प और साथ ही मिलन के आनंद का भावपूर्ण प्रकटीकरण करते हैं।

गुरु जी कथन करते हैं कि वैशाख का महीना अच्छा लगता है। इस महीने में वृक्षों एवं पौधों की नई-नई कोपलें निकलने से ऐसे लगता है मानों शाखाओं ने हरा वेश धारण किया हो। ऐसे सुंदर वातावरण को देखकर जीव-स्त्री के मन में अपने पति-परमात्मा के प्रति मिलन की इच्छा उत्पन्न होती है। वह अपने घर के द्वार पर खड़ी उसकी राह निहारती है और पुकारती है कि मेरी दशा पर तरस करके, ऐ मेरे प्रियतम! घर आ जाओ। यह आध्यात्मिक प्रकटीकरण है जहां घर का प्रतीक जीव-स्त्री का हृदय है। मनुष्य की समस्त बेचैनी दूर होने का एकमात्र साधन प्रभु-नाम का हृदय में निवास होना है। यह भाव संकेत से समझाया गया है।

प्रभु-प्रियतम के साथ मिलन की तीव्र इच्छा में जीव-स्त्री अपनी विनती, अपनी पुकार पुन: दोहराती हुई कहती है कि हे प्रिय ! मुझे भवसागर से पार लगा दो अर्थात् प्रभु-नाम का सहारा मिलने से ही जीव-स्त्री भवसागर को पार करने में सक्षम हो सकती है। इस भाव पर बल देते हुए हेतु गुरु जी जीव-स्त्री की ओर से कथन करते हैं कि हे मेरे प्रिय! तेरे बिना मेरा मूल्य कौड़ी भर भी नहीं है अर्थात् न होने के समान है, चूंकि कौड़ी तो बहुत ही मामूली चीज होती है। उसको न लेने वाला कोई महत्त्व देता है, न देने वाला। हे मेरे पति-परमेश्वर! यदि मैं तुम्हें अच्छी लगने लग जाऊं तो फिर मेरा मूल्य भला कौन आंक सकता है? अर्थात् कोई नहीं आंक सकता। यदि आप मेरे हृदय में बसने लग जाओ तो मुझे विश्वास होगा कि आप मेरे पास ही हो तथा यह मेरा हृदय रूपी महल आपका निवास-स्थान बन जाएगा और मुझे इस महल की पहचान भी हो जाएगी। गुरु जी फरमान करते हैं कि ऐसी स्थिति में जिस जीव-स्त्री का ध्यान प्रभु की कीर्ति गायन करते हुए गुरु-शब्द में जुड़ जाए, तो वैशाख में प्रभु अच्छे लगने लगते हैं अथवा प्रभु जीव-स्त्री को मिल जाते हैं।

संपादकीय

आइए! खालसाई आदर्श के धारक बनें!

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी द्वारा खालसा पंथ की सृजना अकाल पुरख के एक बड़े मिशन की पूर्ति थी। इस धरती पर 'पूर्ण मनुष्य' की सृजना के लिए 'नानक निर्मल पंथ' की 'खालसा पंथ' के रूप में सम्पूर्णता थी।

खालसा पंथ, प्रभु का पंथ था, जिसके अनुयायियों ने धार्मिक जगत में हर प्रकार की मध्यस्थता से मुक्त होकर अकाल पुरख के साथ सीधा सम्बंध स्थापित करना था । इस पंथ ने एक अकाल का पुजारी होकर मानवता की अगुआई भी करनी थी। क्योंकि, पहले बहुत-से मध्यस्थ इस मकसद में असफल हो चुके थे। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी 'बचित्र नाटक' में पूर्व काल के हालातों और अपने मिशन के बारे में फरमान करते हैं :

पेड पात आपन ते जलै ॥ प्रभ कै पंथ न कोऊ चलै ॥ १५ ॥

जिनि जिनि तनिक सिद्ध को पायो ॥ तिन तिन अपना राहु चलायो ॥..

सभ अपनी अपनी उरझाना ॥ पारब्रहम काहू न पछाना ॥ २८ ॥ ६ ॥

धार्मिक नेताओं द्वारा मानवता का उचित मार्गदर्शन नहीं किया जा रहा था। समाज में गिरावट आ चुकी थी। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी को धरती पर भेजकर अकाल पुरख द्वारा ऐसा पंथ स्थापित करने की मंशा थी जो जात-पांत के भेदभाव से ऊपर उठकर मानव समुदाय की सेवा के लिए तत्पर रहे, जो गुरबाणी में वर्णित 'बेगमपुरा' के संकल्प को धरती पर व्यवहारिक रूप प्रदान कर सके, जो "मूए बिनु जीवनु नाही" को सच कर दिखाए, जो धरती धर्मसाल की स्थापना के लिए असुरों का संहार कर सके, दुर्जनों (बदी) का नाश कर दे, धर्मियों के लिए हर प्रकार के संकट का निवारण कर सके। इस मंतव्य की पूर्ति के लिए गुरु साहिब कहते हैं कि अकाल पुरख ने मुझे धरती पर जाकर विशुद्ध पंथ स्थापित करने का हुक्म दिया है :

तप साधत हरि मोहि बुलायो॥ इम कहि कै इह लोक पठायो॥२८ ॥

मैं अपना सुत तोहि निवाजा॥ पंथ प्रचुर करबे कहु साजा ॥

जाहि तहां तै धरमु चलाइ॥ कबुधि करन ते लोक हटाइ॥ २९ ॥ ६ ॥ (बचित्र नाटक)

अकाल पुरख के इस मिशन के तहत कलगीधर पिता जी ने १६९९ ई. की वैशाखी के दिन श्री अनंदपुर साहिब में खालसा पंथ की सृजना की। भारतीय समाज में सदियों से दबे-कुचले, दुत्कारे जा रहे लोगों को पहली बार श्री गुरु नानक पातशाह ने गले से लगाया तथा "जिथै नीच समालीअनि तिथै नदरि तेरी बखसीस॥" का आदर्श विचार पेश किया। इसी विचार को कलगीधर पिता ने "नाम गरीब निवाज़ हमारा।

है जग में प्रसिद्ध अपारा। सो सफला जग मैं तब थे हैं। लघु जातन को बडपन दे हैं।" (पंथ प्रकाश) द्वारा तथाकथित जाति-अभिमानी निठल्ले वर्ग को नकार कर, परिश्रमी लोगों को 'पातशाही' सौंप कर श्रम-प्रधान तथा विलक्षण पंथ— 'खालसा पंथ' की सृजना की । गुरु जी ने खालसा पंथ की सृजना के समय एक बाटे में से सभी को खंडे की पाहुल छकाकर जाति, वर्ण के विभाजन को पूरी तरह से खत्म कर दिया। दूसरा, पांच प्यारों से खुद-खंडे बाटे की पाहुल लेकर गुरु-शिष्य के अंतर को सदैवकाल के लिए मिटाकर 'गुरु ही शिष्य, शिष्य ही गुरु' का विलक्षण मॉडल मानवता के समक्ष पेश किया। गुरु का शिष्य में अभेद होना आने वाले समय में किसी बड़ी जिम्मेदारी का प्रतीक था। "तिन तिन अपना राहु चलायो" वाली सामाजिक गिरावट को सदा के लिए दूर कर अब खालसा ने अपनी अगुआई खुद करनी थी और सारी मानवता की अगुआई करने के योग्य बनना था, इसलिए खालसा के ऊंचे इखलाक वाली 'रहित मर्यादा' निर्धारित कर खालसा को धरती का 'पूर्ण मनुष्य' बनाया गया। खालसा ने अब तक की धार्मिक भ्रांतियों, वहमों-भ्रमों, बिपरवादी रीतियों से खुद मुक्त होकर लोकाई को मुक्त करना था, तभी खालसा कहलाना था :

खालसा खास कहावै सोई। जा के हिरदे भरम न होई।

भरम भेख ते रहै निआरा। सो खालस सतिगुरू हमारा। (श्री गुर सोभा)

मानवाधिकारों की रक्षा हेतु गुरु साहिबान द्वारा दी गई शहादत की रीति को भी अब खालसा ने आगे बढ़ाना था। खालसा ने यह जिम्मेदारी भी बाखूबी निभाई। सिक्ख पंथ का कुर्बानियों भरा इतिहास इस बात का साक्षी है कि खालसा पंथ ने धर्म व देश, की रक्षा हेतु बड़ी से बड़ी कुर्बानी देने से भी संकोच नहीं किया।

सदियों से गुलामी की जंज़ीरों में जकड़ी भारतीय जनता को खालसा पंथ ने ही आज़ाद करवाया। 'खालसा पंथ' ने विश्व भर में बहादुरी की बहुत-सी मिसालें कायम की हैं। १८९७ ई. में सारागढ़ी की जंग में विजय प्राप्त करने वाला, १९४८ ई. में कश्मीर की पहाड़ियों पर डटने वाला, १९६२, १९६५ तथा १९७१ ई. की जंग में देश की मान-मर्यादा बचाने वाला, १९९९ ई. में कारगिल की जंग में विजय प्राप्त करने वाला कलगीधर पिता का खालसा पंथ ही था, जिसने अमृत की शक्ति को प्रत्यक्ष रूप में साकार कर दिखाया।

विगत समय में बी. बी. सी. (समाचार चैनल) द्वारा दुनिया की तीन बहुत खास एवं महान महिलाओं के जारी किए नामों में माता भागो जी का नाम विशेष रूप से दर्ज किया जाना समूचे सिक्ख पंथ के लिए गौरव की बात है। यह भी कलगीधर पिता जी की बख्शिश है, जिन्होंने महिलाओं को भी योद्धा स्वरूप प्रदान कर उन्हें भी जुल्म के विरुद्ध संघर्षशील होने के लिए तैयार किया। इस तरह श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी द्वारा सृजित खालसा पंथ धरती पर एक तरह का इन्कलाब था, जिसने सदियों की कायरता को खत्म कर गौरवशाली जीवन जीने की शिक्षा प्रदान की।

जीवोद्धार हेतु श्री गुरु अंगद साहिब का अनमोल सेवा-संकल्प

*–डॉ. सत्येन्द्र पाल सिंघ**

श्री गुरु अंगद साहिब सिक्ख इतिहास के पहले सिक्ख थे जो श्री गुरु नानक साहिब की शरण में आये और सेवा-भाव को साधना में बदल कर आत्मिक विकास के शिखर पर पहुंचने में सफल रहे। इस सिद्धि ने उन्हें गुरु-पद पर आसीन कर सिक्ख पंथ में सेवा के महत्व को स्थापित किया और सेवा के सच्चे स्वरूप को परिभाषित भी किया। श्री गुरु नानक साहिब के दर पर वे आये घोड़ी पर सवार होकर थे, किन्तु गुरु साहिब के दर्शन-मात्र ने उन्हें 'सवार' से 'सेवक' बना दिया। वे अपने समाज के चौधरी थे। उनका सम्मान था, समृद्धि थी, किन्तु श्री करतारपुर साहिब आकर भावना के नये रूप का जन्म हुआ। सेवा अब सम्मान का सदैव झूलता हुआ छत्र लगने लगी थी :

चाकरु लगै चाकरी जे चलै खसमै भाइ ॥
हुरमति तिस नो अगली ओहु वजहु भि दूणा खाइ ॥
(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ४७४)

सेवा-भावना वाले अनेक हैं। सेवा करने वालों की गणना नहीं की जा सकती। किन्तु, सार्थक सेवा का भाव भिन्न है, जिसे श्री गुरु अंगद साहिब ने अनुभव किया और संसार को बताया। गुरु साहिब ने कहा कि वह सेवा सफल एवं सार्थक है जो स्वामी को प्रिय लगे और स्वामी की आज्ञा के अनुसार हो। इससे स्वामी की दृष्टि में सेवक का सम्मान बढ़ जाता है और वह अपने सेवक पर अधिक उदार होकर उसे अपनी कृपा से भरपूर कर देता है। सेवा-भावना कैसे मन में विकसित हो, इसका समाधान भी श्री गुरु अंगद साहिब ने अपनी बाणी में किया।

गुरु पर विश्वास : श्री गुरु अंगद साहिब ने कहा कि गुरु के उपदेशों और शिक्षाओं पर अटल विश्वास होना चाहिए। परमात्मा के सच्चे स्वरूप का ज्ञान और परमात्मा के मार्ग पर चलने की प्रेरणा गुरु से ही प्राप्त होती है। मनुष्य अथाह ज्ञान अर्जित कर ले, बुद्धि और चतुरता से कितने ही रहस्य जान जाये, किन्तु वे व्यर्थ हैं और घोर अंधकार की भांति हैं, जिनमें भटकता हुआ मनुष्य पूरा जीवन व्यतीत कर देता है, फिर भी परमात्मा का पथ जान नहीं पाता :

जे सउ चंदा उगवहि सूरज चड़हि हजार ॥
एते चानण होदिआं गुर बिनु घोर अंधार ॥
(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ४६३)

**ई–१७१६, राजाजीपुरम, लखनऊ – २२६०१७, फोन : ९४१५९६०५३३, ८४१७८५२८९९*

पूरे संसार को दिन में एक सूर्य और रात को एक अकेला चंद्रमा ही पूर्ण प्रकाशित रखता है, अंधकार निकट नहीं आता। श्री गुरु अंगद साहिब ने उदाहरण दिया कि यदि संसार में सैकड़ों चंद्रमा और हजारों सूर्य प्रकाश देने के लिये भी उग आयें, किन्तु गुरु के ज्ञान के बिना संसार घोर अंधकार में डूबा रहेगा। वो अंधकार मन का है, अंत:करण का है। वास्तविक प्रकाश गुरु का ज्ञान है जो मन के अंधकार को दूर करता है। गुरु साहिब ने कहा कि गुरु का ज्ञान ही परमात्मा के साथ मिलन में सहायक है। चंचल मन सदैव माया के भ्रम में भटकता रहता है। इस भटकन के कारण उसे सच का ज्ञान नहीं हो पाता, मन परमात्मा से जुड़ नहीं पाता। मन को स्थिर कर परमात्मा का ध्यान, सुमिरन करने की शक्ति गुरु से प्राप्त होती है :

गुर कै सबदि सलाहीऐ हरि नामि समावै ॥
सतिगुर सेवा सफल है सेविऐ फल पावै ॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ७९१)

गुरु की आज्ञा मानना ही गुरु की सच्ची सेवा है। इस सेवा का फल मिलता है कि मन भटकन से मुक्त होकर परमात्मा में टिक जाता है। मन में परमात्मा की महिमा के गुणगान की पक्की अवस्था सृजित हो जाती है। गुरु का हुक्म ही परमात्मा की कृपा प्राप्त करने का एकमात्र माध्यम है। इसे जानकार ही श्री गुरु अंगद साहिब श्री गुरु नानक साहिब की एक-एक आज्ञा का प्रसन्न मन से पालन करते रहे थे। मन परमात्मा के सुमिरन में टिका होता और तन सेवा में। तन और मन का सुमेल था तभी आधी रात को उन्होंने श्री गुरु नानक साहिब के कपड़े धोये, बरसात में गिर गई दीवार बनाई, गंदी नाली में से छन्ना (कटोरा) निकालने में रत्ती भर भी संकोच नहीं किया। बहुत-से लोगों के बहुत आश्रय थे, कई आराध्य थे, किन्तु श्री गुरु अंगद साहिब के तो एक ही स्वामी, एक ही आराध्य, एक ही दाता, एक ही आश्रय थे— श्री गुरु नानक साहिब। सिक्ख का उद्धारक एक ही है :

किस ही कोई कोइ मंजु निमाणी इकु तू ॥
किउ न मरीजै रोइ जा लगु चिति न आवही ॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ७९१)

सिक्ख का एक ही ठौर है। वह दीन है, निर्बल है। उसका सहायक, बल गुरु है। गुरु यदि मन में नहीं बस रहा है तो उसे अन्य कहीं कोई ठौर नहीं है। वह दुख भोगता है और मृतक के समान जीवन जीता है। गुरु की आज्ञा में रहना है, उसकी सेवा करनी है और इस भावना से करनी है कि गुरु ही उसका सब कुछ है। इस भावना से गुरु पर विश्वास दृढ़ होगा। सिक्ख अपने मन में गुरबाणी को दृढ़तापूर्वक धारण करे, जिससे उसकी मति विचलित नहीं होगी और गुरु–परमात्मा को पूर्ण समर्पित हो जायेगी— "गुरमुखि बाणी नामु है नामु रिदै वसाई॥ मति पंखेरू वसि होइ सतिगुरु धिआई॥" मन में सेवा और समर्पण की भावना

को तभी आधार मिलता है जब विनम्रता हो, मन अहंकार से मुक्त हो। श्री गुरु अंगद साहिब ने इसे आवश्यक बताया।

विनम्रता का भाव : अहंकार से मुक्त हुए बिना, विनम्रता धारण किये बिना सेवा की सार्थकता नहीं है। श्री गुरु नानक साहिब की शरण में आकर श्री गुरु अंगद साहिब ने सबसे पहले अपने धन, व्यापार, सामाजिक स्थान के अभिमान का त्याग किया। स्व की भावना ही नहीं रही। तभी पहले दिन ही उन्होंने श्री गुरु नानक साहिब के आदेश पर घास की गीली, कीचड़ से सनी गाँठ बिना हिचकिचाहट सिर पर उठा ली थी। कीमती वस्त्र गंदे हो गये, किन्तु मुख पर गुरु की आज्ञा के पालन का आनंद था। श्री गुरु अंगद साहिब ने अहंकार को ऐसे बंधन की संज्ञा दी, जिससे बंधा हुआ मनुष्य आवागमन के चक्र में फंसा रहता है, जन्म–मरण के फेर से मुक्त नहीं हो पाता। सेवा और समर्पण में अहंकार का कोई स्थान नहीं है :

सलामु जबाबु दोवै करे मुंढहु घुथा जाइ॥
नानक दोवै कूड़ीआ थाइ न काई पाइ॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ४७४)

श्री गुरु नानक साहिब के दरबार में अनेकानेक सेवक सिक्ख सेवा को तत्पर रहते थे, किन्तु गुरु साहिब के आदेशों को अपनी बुद्धि की कसौटी पर भी कसने की प्रवृत्ति रखते थे। जैसे गुरु साहिब ने मध्य रात्रि में कपड़े धोने को कहा तो सिक्खों ने कपड़े धोने से इन्कार नहीं किया, किन्तु कहा कि सुबह धो देंगे, अभी तो पहनने नहीं हैं। श्री गुरु अंगद साहिब ने कहा कि सेवा भी और तर्क भी, ये साथ-साथ नहीं चल सकते। सवाल और तर्क स्व मति के अहंकार से उत्पन्न होते हैं। ऐसी सेवा मूलत: ही दोषपूर्ण है। इससे न तो सेवा का कोई फल प्राप्त होता है न तर्क ही स्वीकार होता है, ऐसी भावना वाला मनुष्य गुरु की कृपा से वंचित रहता है। श्री गुरु अंगद साहिब ने सेवा के अहंकार के प्रति सचेत किया। आज गुरु साहिब की इस चेतावनी की प्रासंगिकता अधिक हो गई है :

चाकरु लगै चाकरी नाले गारबु वादु ॥
गला करे घणेरीआ खसम न पाए सादु ॥
आपु गवाइ सेवा करे ता किछु पाए मानु ॥
नानक जिस नो लगा तिसु मिलै लगा सो परवानु॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ४७४)

बहुत-से लोग सेवा करते हैं और फिर प्राय: उसका अहंकार करते हैं। अक्सर सेवा करते हुए अन्य के साथ अभद्र व्यवहार करते हैं, झगड़ा करते हैं। धर्म-कर्म की बड़ी-बड़ी बातें करते हैं, किन्तु धर्म के तत्व का रत्ती भर भी ज्ञान नहीं होता है। ऐसी सेवा भी निरर्थक है। श्री गुरु अंगद साहिब ने कहा कि सेवा वही सार्थक है जो अहंकार से पूरी तरह से मुक्त होकर सहज और प्रेम-भाव से की जाये। सेवा परमात्मा की कृपा की प्राप्ति के लिये है। सेवा वही है जो इस उद्देश्य की प्राप्ति में

सहायक हो और उसकी कृपा से जीवन सफल हो जाये अर्थात् आवागमन से मुक्ति प्राप्त हो जाये। सेवा का उद्देश्य महान है। यह परमात्मा के साथ मिलाप का माध्यम है। सेवा करते हुए जिस अवस्था का सृजन होना आवश्यक होता है, वह वास्तव में एक कठोर साधना से प्राप्त होती है। यह साधना है— मन का पल-पल परमात्मा के ध्यान में रमे रहना। विकार, अवगुण कभी भी, मनुष्य के न चाहते हुए भी प्रकट हो जाते हैं। इनसे सदा के लिये मुक्ति परमात्मा के सतत् ध्यान और कृपा से ही संभव है :

जितु सेविऐ सुखु पाईऐ सो साहिबु सदा सम्हालीऐ ॥
जितु कीता पाईऐ आपणा सा घाल बुरी किउ घालीऐ ॥ (श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ४७४)

परमात्मा की कृपा से ही जीवन का उद्धार होना है। एकमात्र वही सुखों का दाता है। ऐसे दयालु परमात्मा में मन सदैव रमा रहे। मनुष्य का हित इसी में है कि विकारों, अवगुणों का सदा के लिये त्याग कर मनुष्य गुण धारण करे। केवल सेवा ही निष्काम न हो, बल्कि पूरा जीवन ही विनम्रता भरा, गुणों से युक्त हो। इसके लिये श्री गुरु अंगद साहिब ने मनुष्य का ध्यान उसके कर्मों की ओर आकृष्ट किया और वचन किया कि यदि मनुष्य को अपने कर्मों का फल ही भोगना है तो वह मंदे कर्म करे ही क्यों! क्यों न सदैव सुकर्म करे! मनुष्य का निष्काम-भाव और समर्पण उसके जीवन का ढंग ही बदल देता है। श्री गुरु अंगद साहिब एक सिक्ख के रूप में श्री गुरु नानक साहिब की कसौटी पर इसलिये खरे उतर सके क्योंकि उनका तन-मन भावना में रंग गया था। उनके विश्वास और व्यवहार में मात्र भावना प्रकट हो रही थी। इसे गुरु साहिब ने जीवित-मृतक अवस्था कहा, जो सेवा को सहज बनाती है और फलीभूत करती है।

जीवित-मृतक : श्री गुरु अंगद साहिब की शिक्षा थी कि मन में जिस वाहिगुरु–परमात्मा के लिये प्रेम है, मनुष्य उसके आगे अपना सर्वस्व अर्पण कर दे। तन व मन अर्पण करने के पश्चात भावना इतनी प्रबल हो जाती है कि तन, मन के अधीन हो जाता है। मन ही जीवन संचालित करता है, तन गौण हो जाता है :

अखी बाझहु वेखणा विणु कंना सुनणा ॥
पैरा बाझहु चलणा विणु हथा करणा ॥
जीभै बाझहु बोलणा इउ जीवत मरणा ॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना १३९)

श्री गुरु अमरदास साहिब जब श्री गुरु अंगद साहिब की सेवा में आये उस समय उनकी आयु लगभग बासठ वर्ष थी। एक दशक से अधिक समय तक उन्होंने श्री गुरु अंगद साहिब और गुरु-घर की सेवा की। वृद्ध आयु उनकी सेवा-कार्यों में कभी भी आड़े नहीं आई, क्योंकि उनकी सशक्त भावना ने तन की निर्बलता को अर्थहीन बना दिया था। गुरु स्वयं अपने सेवक को अपनी दृष्टि प्रदान

कर देता है, अपना बल दे देता है। परमात्मा को समर्पित और परमात्मा में रमा हुआ मन कभी पराश्रित नहीं रहता। उसकी प्रतीति ही सेवा और भक्ति का माध्यम बन जाती है। ऐसा सेवक अपने किसी भी कार्य का श्रेय स्वयं को नहीं देता है। उसके बल का आधार ही बदल जाता है :

भै के चरण कर भाव के लोइण सुरति करेइ ॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना १३९)

परमात्मा का भय उसके पैर बन जाते हैं। परमात्मा की शक्ति और सर्वव्यापकता उसे कभी भी पाप-कर्मों की ओर उन्मुख नहीं होने देती है। वह सदैव परमात्मा के पथ पर गुरु के उपदेशों का पालन करता हुआ चलता है। भावना उसे सदैव सत्कर्म करने को प्रेरित करती रहती है। उसकी दृष्टि में परमात्मा बस जाता है। उसे सर्वत्र परमात्मा का रूप ही दृष्टिगोचर होता है। भाई घनईया जी जब युद्ध के मैदान में घायल सैनिकों को पानी पिलाने के लिये निकले तो हर सैनिक के मुख पर उन्हें श्री गुरु गोबिंद सिंघ साहिब का रूप ही नज़र आया और वे शत्रु–मित्र का भेद ही भूल गये। भावना हो तो "सुभ करमन ते कबहूं न टरों" का संकल्प उत्पन्न हो जाता है। परमात्मा के प्रति पूर्ण समर्पण और स्व का त्याग मनुष्य में ऐसी श्रेष्ठ अवस्था का सृजन करता है कि वह पूर्णता प्राप्त कर लेता है। सभी आत्मिक शक्तियां उसमें समाहित हो जाती हैं। उसका स्वयं का उद्धार तो होता ही है वह समाज, संसार का भी उद्धार करने योग्य हो जाता है। ठीक वैसे ही जैसे एक राजा अपने पूरे राज्य का हित करता है :

सेई पूरे साह जिनी पूरा पाइआ ॥
अठी वेपरवाह रहनि इकतै रंगि ॥
दरसनि रूपि अथाह विरले पाईअहि ॥
करमि पूरै पूरा गुरू पूरा जा का बोलु ॥
नानक पूरा जे करे घटै नाही तोलु ॥२ ॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना १४६)

श्री गुरु अंगद साहिब ने वचन किया कि वह भाग्यशाली है जिसने सच्चा गुरु धारण किया है। सच्चे गुरु का एक-एक वचन सत्य होता है। सच्चा गुरु अपने सिक्ख को कभी भी, किसी भी तरह के अभाव में नहीं रखता है, उसकी मर्यादा, सम्मान सदैव सुरक्षित रखता है। पूर्ण गुरु की कृपा ही मनुष्य को पूर्ण बनाती है। इसी में जीवन की सार्थकता है। गुरु की कृपा हो तो मनुष्य सभी चिंताओं से मुक्त हो जाता है, जीवन में सहज और संतोष आ जाता है, परमात्मा की अपार महिमा के दर्शन होने लगते हैं। श्री गुरु अंगद साहिब का भाग्योदय हुआ और वे श्री गुरु नानक साहिब की शरण में आये। श्री गुरु नानक साहिब ने कृपा कर उन्हें गुणों से भरपूर कर दिया। श्री गुरु नानक साहिब की गद्दी पर विराजमान हो श्री गुरु अंगद साहिब 'पूरे साह' बन गये और मानवता को उद्धार का मार्ग दिखाया।

श्री गुरु अंगद देव जी को गुरुआई मिलने से संबंधित साखियाँ

*–डॉ. कशमीर सिंघ 'नूर'**

सिक्ख पंथ की बुनियाद जगत-गुरु श्री गुरु नानक देव जी ने इतनी मजबूती के साथ रखी कि इस पंथ ने अधर्म, अन्याय, झूठ, असत्य, असमानता, पाखण्डवाद, रूढ़िवादिता की जड़ें उखाड़ कर रख दीं। श्री गुरु नानक साहिब ने सिक्ख धर्म की आन, बान, शान को ध्यान में रखते हुए जिस तरह अपने उत्तराधिकारी का चयन किया, वो लामिसाल है। वे सिक्ख धर्म की बागडोर, आगवानी उसी काबिल व्यक्ति को सौंपना चाहते थे, जो इसका प्रचार-प्रसार मज़बूत इरादे के साथ कर सके। उन्होंने अपने उत्तराधिकारी की परख करने के लिए कड़ी व कठिन कसौटी का उपयोग किया। इस संबंध में श्री गुरु अंगद देव जी को गुरुआई की जिम्मेदारी संभालने के विषय में अनेक साखियाँ (साक्षियां) प्रसिद्ध व प्रचलित हैं।

श्री गुरु अंगद देव जी का पहला नाम भाई लहिणा जी था। उनका जन्म मत्ते दी सरां (सराय नागा) ज़िला श्री मुकतसर साहिब में भाई फेरू जी तथा माता सभराई जी के घर ३१ मार्च, १५०४ ई. (वैशाख वदी प्रथम, संवत् १५६१) को हुआ। उस समय भारत में इब्राहिम लोधी का शासन था और बाबर ने हिंदोस्तान पर आक्रमण करना शुरू कर दिए थे। वह 'भेरा' नामक स्थान तक पहुंच गया था। सन् १५२१ ई. में उसने सैदपुर में नरसंहार किया। इसका वर्णन श्री गुरु नानक देव जी ने अपनी बाणी में भी किया है। बाणी भी हमें ऐतिहासिक जानकारी मुहैया करवाती है। सन् १५२६ ई. में बाबर ने एक भारी आक्रमण किया और पानीपत के प्रथम युद्ध में इब्राहिम लोधी को हराकर वह दिल्ली के सिंहासन पर काबिज़ हो गया। इस आक्रमण के बीच 'मत्ते दी सरां' (गुरु जी की जन्म-भूमि) तबाह हो गई। भाई लहिणा जी का परिवार गाँव संघर, जिला तरनतारन आकर बस गया। उसी वर्ष भाई फेरू जी का शरीरांत हो गया। घर-गृहस्थी की जिम्मेदारी भाई लहिणा जी को संभालनी पड़ी। उनके पिता जी देवी-भक्त थे। जत्था-प्रमुख होने के नाते वे हर वर्ष पहाड़ों वाली देवी के दर्शन हेतु जत्था लेकर जाया करते थे। यह कार्य भी भाई लहिणा जी के सुपुर्द हो गया। अब वे भी जत्था लेकर जाने लगे।

एक बार खडूर साहिब में प्रभात के समय भाई

**बी-एक्स/९२५, संतोखपुरा, हुशियारपुर रोड, जलंधर-१४४००४, फोन : ९८७२२-५४९९०*

जोध जी के मुख से बाणी श्रवण की :

जितु सेविऐ सुखु पाईऐ सो साहिबु सदा सम्हालीऐ।।

जितु कीता पाईऐ आपणा सा घाल बुरी किउ घालीऐ।।

मंदा मूलि न कीचई दे लंमी नदरि निहालीऐ।।

जिउ साहिब नालि न हारीऐ तेवेहा पासा ढालीऐ।।

किछु लाहे उपरि घालीऐ।।

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ४७४)

बाणी श्रवण कर भाई लहिणा जी अति प्रभावित हुए और उनका मन इस बाणी के उच्चारणकर्ता के दर्शन-दीदार करने हेतु व्याकुल हो उठा। देवी-दर्शन हेतु जम्मू को जाते जत्थे को छोड़ वे श्री करतारपुर साहिब चले आए। जगत्-गुरु जी के दर्शन-दीदार कर मन की व्याकुलता मिटी और परम संतोष एवं आनंद की प्राप्ति हुई। फिर वे वहीं पर रहने लगे। यह घटना सन् १५३२ ई. की है।

कुछ दिनों के पश्चात् भाई लहिणा जी श्री खडूर साहिब आए और दुकानदारी आदि का सब काम अपने पारिवारिक सदस्यों को सौंपकर पुन: श्री करतारपुर साहिब लौट आए। सिक्ख इतिहास में वर्णन मिलता है कि जब वे इस बार श्री करतारपुर साहिब लौटे, वे नमक की एक पोटली अपने सिर पर रख कर लाए। नमक की पोटली घर पर रखकर सीधे खेतों में श्री गुरु नानक देव जी के पास चले गए। श्री गुरु नानक देव जी उस समय धान के खेत में से घास निकाल रहे थे। भाई लहिणा जी भी घास उखाड़ने लगे। कृषि-कार्य कभी किया नहीं था, अत: वे घास के साथ धान के पौधे भी उखाड़ने लगे। यह देख गुरु महाराज जी मुस्कराते रहे। घास का गट्ठर तैयार हो गया। गट्ठर भाई लहिणा जी ने सिर पर उठा लिया। घर पहुंचने पर जब माता सुलक्खणी जी ने गुरु जी से पूछा कि "आपने इनको घास क्यों उठवाई? देखिए, इनके वस्त्र कीचड़ से लथपथ हो गए हैं।" तब महाराज जी ने फ़रमान किया कि "इनके सिर पर घास का गट्ठर नहीं है, बल्कि इन्हें दीन-दुनिया का छत्र दिया है। इनके वस्त्रों पर कीचड़ नहीं, मानों केसर है। ये बड़े भाग्यवान पुरुष हैं।" 'महिमा प्रकाश' ग्रंथ के रचयिता के शब्दों में श्री गुरु नानक देव जी ने फ़रमाया :

मैं दीन दुनिया की छत्र सिरधारा।
वह कीच जल नहीं, केसर सिर डारा।
एह लहन, मैं इस को देना।
कहों सत, मिथिआ नहीं बैना।
इन को मो सो है बिध बनी।
मेरे राज को आइओ धनी ।

(साखी ५१, श्री गुरु नानक देव जी से मिलाप)

भाई लहिणा जी ने श्री करतारपुर साहिब में सतिगुरु नानक देव जी की निगरानी में सात वर्ष बिताए और उनके बताए मार्ग पर चलने का अथक परिश्रम किया। भाई सत्ता जी–भाई बलवंड

जी के शब्दों में, "श्री गुरु अंगद देव जी ने मर्दों वाली मेहनत की और वे अपने स्वामी सतिगुरु नानक देव जी के दर पर कबूल हुए।"

पए कबूलु खसंम नालि जां घाल मरदी घाली।।

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ९६७)

वे घटनाएं, जो इन वर्षों के दौरान हुईं, विशेष वर्णनीय व अवलोकनीय हैं। इस बात से इन्कार नहीं किया जा सकता कि साखीकारों ने कहीं-कहीं पर अतिश्योक्तिपूर्ण वर्णन किया है। किंतु, साखी अर्थात् साक्षी का अर्थ ही गवाही होता है और गवाही दर्ज करवाते वक्त इधर-उधर की बातें होने की संभावना भी बनी रहती है। सच्ची गवाही से सच सामने आ जाता है और हमें सच पर विश्वास करना है, इसे अपनाना है।

प्रथम साखी यह गवाही देती है कि जब भाई लहिणा जी श्री खडूर साहिब से वापिस आए, तब श्री गुरु नानक देव जी ने घास का गट्ठर उठाने के लिए फ़रमाया। भाई लहिणा जी ने सहर्ष सिर पर उठा लिया। इस प्रकार वे सेवा की सीढ़ी के पहले डंडे (पाए) पर चढ़ गए। श्री गुरु नानक देव जी ने दरसाना (बताना) था कि "सिक्ख कभी श्रमिकों, ग़रीबों, कामगारों के साथ घृणा नहीं करता, बल्कि कर्म करने को ही अपना धर्म समझता है और श्रमिकों के साथ गहरा स्नेह रखता है। भाई लहिणा जी ने घास का गट्ठर उठाकर यह प्रकट किया कि गुरु का सेवक भी कर्म करने में खुशी महसूस करता है। श्री गुरु नानक देव जी का उत्तर कि 'दीन-दुनिया का छत्र दिया है', गौर से पढ़ने-समझने वाली बात है। गुरु जी श्रम की महानता को केसर की खुशबू व रंग के तुल्य मानते हैं। श्रम को उनके दर पर उच्च स्थान प्राप्त है।

फिर वर्णन मिलता है कि एक बार गंदे नाले में एक कटोरा गिर गया। स्वाभाविक ही गुरु जी ने अपने दोनों पुत्रों से उसे बाहर निकालने को कहा। उन दोनों ने मन में संकोच किया तो भाई लहिणा जी को वह कटोरा निकालने का आदेश हुआ। उन्होंने वह कटोरा बाहर निकाल लिया। सेवा की सीढ़ी के दूसरे डंडे पर चढ़कर भाई लहिणा जी ने सिद्ध कर दिया कि कर्म कैसा भी हो, घृणा नहीं करनी चाहिए।

एक दिन बरामदे में एक मृत चुहिया पड़ी थी। गुरु-पुत्रों ने उसे भी उठाने से मना कर दिया, तो भाई लहिणा जी ने तुरंत चुहिया उठाकर बाहर फेंक दी। पढ़ने-सुनने में ये घटनाएं मामूली व छोटी लग सकती हैं, परंतु जिस युग में ऐसे काम किसी एक विशेष वर्ग (तथाकथित नीच) द्वारा करवाने का समाज में प्रचलन था और उसे देख 'थू-थू' होती थी और उसे छूना भी अच्छा नहीं समझा जाता था, उस समय उस वर्ग के अलावा ऐसे कार्य कोई महान् आत्मा ही कर सकती थी। श्री गुरु नानक देव जी भाई लहिणा जी को कुंदन बना रहे थे, "ओहु ग़रीबु मोहि भावै" के वास्तविक अर्थ

दरसा रहे थे :

नीचा अंदरि नीच जाति नीची हू अति नीचु ॥
नानकु तिन कै संगि साथि
वडिआ सिउ किआ रीस।।

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना १५)

चौथी साखी (गवाही) है कि अति सर्दी के मौसम में श्री गुरु नानक देव जी ने भाई लहिणा जी को धर्मशाला की गिरी हुई दीवार को बनाने के लिए कहा। ऊपर से वर्षा भी हो रही थी। भाई लहिणा जी ने 'सत् वचन' कहकर दीवार बनानी शुरू कर दी। ऐसा भी कहा जाता है कि श्री गुरु नानक देव जी दीवार गिरा देते और उनके अनन्य सेवक भाई लहिणा जी पुन: उसे बनाने में जुट जाते। देखने वाले हैरान हो रहे थे और श्री गुरु नानक देव जी आनंदित हो रहे थे। इस प्रकार उनके आज्ञाकारी व समर्पित शिष्य, सेवा नामक सीढ़ी के एक और पायदान पर चढ़ गए।

भाई लहिणा जी द्वारा निष्ठा व लगन से सेवा करने की तथा हुक्म मानने की भावना की परीक्षा लेने से संबंधित पांचवीं साखी है कि श्री गुरु नानक देव जी ने ठंड के मौसम में ही एक बार उन्हें आधी रात को रावी नदी के तट पर जाकर कपड़े धो लाने का हुक्म दिया। भाई लहिणा जी ने यह हुक्म भी सिर झुकाकर एवं हाथ जोड़कर स्वीकार किया। उन्होंने 'धोबियों वाला' कार्य कर यह सिद्ध कर दिया कि उनके लिए गुरु-हुक्म ही सर्वोपरि है। वे सफलता की सीढ़ी के पाँचवें डंडे पर चढ़ गए।

श्री गुरु नानक देव जी द्वारा भाई लहिणा जी को परख की आंच में तपा-तपाकर कुंदन बनाए जाने से संबंधित और भी साखियाँ हैं। एक बार जगत्-गुरु जी ने स्नान करने के लिए रावी के जल में अभी डुबकी लगाई ही थी कि ओलावृष्टि होने लगी। सभी सिक्ख अपने बचाव के लिए पेड़ों की ओट में हो लिए, परंतु भाई लहिणा जी वहीं पर खड़े रहे। जब जगत्-गुरु जी ने पूछा कि तुम क्यों नहीं गए, तब उन्होंने नम्रतापूर्वक उत्तर दिया, "मैं आपको अकेले में बरसात में छोड़कर भला कैसे जाता!" मुश्किल के समय भी अपने इष्ट, अपने गुरु की ओर मुख रहे, ऐसा उन्होंने दृढ़ करवा दिया।

इसी तरह एक बार सतिगुरु नानक देव जी ने पूछा कि कितनी रात बीत गई है? भाई लहिणा जी ने कहा, "जितनी आपने बिताई है, उतनी ही बीती है। रात भी आपकी, दिन भी आपका।"

दरअसल हक़ीक़त यह है कि भाई लहिणा जी ने दुनिया को बता दिया कि अपने इष्ट, अपने स्वामी का आदेश मानना और सच्ची भावना से सेवा करना ही जगत् में सर्वोपरि है। 'महिमा प्रकाश' में वर्णन मिलता है :

रात दिवस जानत हम नाही।
निस दिन धिआन सतिगुर मनाही ।

एक साखी एक और कड़ी परीक्षा की थी, जिसमें भाई लहिणा जी न केवल सफ़ल ही हुए,

बल्कि वे वहां पर पहुंच गए, जहां पर श्री गुरु नानक देव जी उन्हें ले जाना चाहते थे। एक मुर्दा खाने के हुक्म की पालना करने वाली घटना में भी भाई लहिणा जी उत्तीर्ण हुए। श्री गुरु नानक देव जी का भाई लहिणा जी पर विश्वास दृढ़ हो गया।

भाई सेवा राम 'पर्चियां' नामक पुस्तक में वर्णन करते हैं :—

श्री गुरु नानक देव जी ने भाई लहिणा जी को गले से लगाया और उन्हें गुरुआई सौंप दी। उस समय वचन किए, "पुरखा! जो तुझे मानेगा, सो मुझे मानेगा। तउ कर सेवेगा, सो मैं कउ सेवेगा। तू मैं, मैं तू । जो तुम-हम कउ भिन्न जानेगा, सो गुरु से बिछरिआ रहेगा।"

भाई सत्ता जी व भाई बलवंड जी श्री गुरु अरजन देव जी के समय गुरु-घर में बाणी का कीर्तन किया करते थे। उन्होंने इस घटना के विषय में वर्णन किया है :

लहणे धरिओनु छतु सिरि करि सिफती अंम्रितु पीवदै ॥
मति गुर आतम देव दी खड़गि जोरि पराकुइ जीअ दै ॥
गुरि चेले रहरासि कीई नानकि सलामति थीवदै ॥
सहि टिका दितोसु जीवदै ॥१॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ९६६)

भाई गुरदास जी इस संबंध में लिखते हैं कि श्री गुरु नानक देव जी द्वारा श्री गुरु अंगद देव जी को अपना उत्तराधिकारी बना गुरुआई सौंपना, एक दीए से दूसरे दीए को जलाने के समान है :

—गुरु अंगदु गुरु अंगु ते अंम्रित बिरखु अंम्रित फल फलिआ।
जोती जोति जगाईअनु दीवे ते जिउ दीवा बलिआ।
हीरै हीरा बेधिआ छलु करि अछुली अछलु छलिआ।
कोइ बुझि न हंघई पाणी अंदरि पाणी रलिआ।

(वार २४ : ८)

—थापिआ लहिणा जींवदे
गुरिआई सिरि छत्रु फिराइआ। (वार १ : ४५)

भाई लहिणा जी को गुरुआई की जिम्मेदारी देते वक्त श्री गुरु नानक देव जी ने उन्हें एकत्र की गई बाणी की पोथी प्रदान की। एक साखीकार 'जन्म-साखी' में उल्लेख करता है— "प्रसन्न होकर बाणी दा खज़ाना गुरु अंगद दे हवाले कीता।"

—अंगहु अंगु ओपाइओनु गंगहु
जाणु तरंगु उठाइआ।
गहिर गंभीरु गहीरु गुणु
गुरमुखि गुरु गोबिंदु सदाइआ।. . .
बाबाणे गुर अंगदु आइआ ॥५॥ (वार २४:५)
—पुत सपुतु बबाणे लहणा॥७॥ (वार २४:७)

श्री गुरु तेग बहादर साहिब का प्रारंभिक जीवन-वृत्तांत

*–डॉ. मनजीत कौर**

प्रकृति के अटल नियमानुसार इस धरती पर जब-जब अन्याय, पाप और अत्याचार बढ़ता है, मानवता त्राहि-त्राहि कर उठती है, फिर निरीह प्राणियों की करुण पुकार सुनकर ईश्वर किसी ऐसे महानुभाव को इस संसार में भेजता है, जो अन्याय, पाप और अत्याचार को समूल नष्ट कर, पुन: धर्म की स्थापना कर विश्व-शांति स्थापित करता है। ठीक ऐसी ही विकट परिस्थितियों में महानुभाव श्री गुरु तेग बहादर साहिब का आगमन हुआ।

जन्म एवं बाल्यावस्था : श्री गुरु तेग बहादर साहिब का जन्म वैशाख वदी ५, संवत् १६७८ (१ अप्रैल, १६२१ ई.) को मीरी-पीरी के मालिक, छठम पातशाह श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब तथा माता नानकी जी के घर श्री अमृतसर साहिब में हुआ, जहाँ वर्तमान में गुरुद्वारा गुरु का महल सुशोभित है। आपका बचपन का नाम 'तिआग मल्ल' था। भाई नंद लाल जी ने श्री गुरु तेग बहादर साहिब के अनुपम व्यक्तित्व को अत्यन्त सरल एवं सहजता से प्रकट करते हुए स्पष्ट किया है कि ईश्वर ने उन्हें महापुरुषों में उत्तम स्थान प्रदान किया है। उन पर प्रभु की अपार अनुकम्पा थी, इसलिए वे सबके उपास्य बने :

बर हर मुकबल कबूलि खुद अरजूदश
मसजूदुल आलमीं जि फज़लि खुद फरमूदश।

आप मूलत: संत स्वभाव के मालिक थे। आपके चार बड़े भाई और एक बहन थी। आप घर में सबसे छोटे और होनहार सपूत थे। स्वाभाविक रूप से श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब अपने इस नौनिहाल में से गंभीर सहजावस्था के दीदार किया करते थे। 'श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथ' के रचयिता भाई संतोख सिंघ के अनुसार श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब ने अपने सुपुत्र हेतु जो आशीर्वच कहे, वे इस प्रकार हैं :

अजर जरन जग धीर धुरंधर।
इस मानिंद न को जग अंदरि।

श्री तिआग मल्ल जी शांत व गंभीर प्रकृति के स्वामी थे। माता नानकी जी अपने बच्चों को संग लेकर नित्य श्री हरिमंदर साहिब में दर्शनार्थ जाकर उन्हें पूर्व गुरु साहिबान के जीवन-इतिहास से अवगत करवातीं और मीरी-पीरी के सिद्धांत आदि के संदर्भ में बतातीं।

गुरु जी वास्तव में त्यागी प्रवृत्ति के थे। 'यथा नाम तथा गुण' वाली उक्ति उन पर पूर्णतया चरितार्थ हो रही थी। सांसारिक सुख-सुविधाओं, उपहारों आदि से उनका तनिक भी लगाव नहीं था। उनकी त्यागी प्रवृत्ति का एक पुख्ता प्रमाण, उस समय की घटना है जब उनकी आयु मात्र ४ वर्ष थी। घर में बड़े भ्राता भाई गुरदित्ता जी की शादी थी। माता नानकी जी ने श्री तिआग मल्ल जी को सुन्दर पोशाक पहनाई। जब श्री तिआग मल्ल जी ने अर्द्धनग्न

**२/१०४, जवाहर नगर, जयपुर-३०२००४, फोन : ९९२९७-६२५२३*

अवस्था में एक बालक को देखा तो उन्होंने तुरन्त अपनी पोशाक उतार कर उस बालक को पहना दी। जब माता जी ने पूछा कि वस्त्र कहाँ हैं, तो उन्होंने बड़े सहज भाव से सारी घटना को स्पष्ट किया। माता नानकी जी अपने सुपुत्र की संवेदनशीलता पर मंत्रमुग्ध हो गईं। वास्तव में 'दान' की यही प्रवृत्ति आजीवन अर्थात् उनकी शहीदी तक बनी रही।

'होनहार बिरवान के होत चिकने पात' वाली कहावत की सत्यता उस दिन सिद्द हो गई जब श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब ने अपने इस लाल श्री तिआग मल्ल जी को पहली बार देखा तो शीश झुका कर वन्दना की । यह सब देखते हुए भाई बिधीचंद ने प्रश्न किया कि "पिता का पुत्र को प्रणाम, वो भी नवजात शिशु को?" इस पर श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब का बड़ा ही सहज जवाब था— "यह नवजात शिशु कोई साधारण जीवात्मा नहीं है। यह तो परम तेजस्वी, दीनों का रक्षक और जनसाधारण के संकट, दुख-संताप का हरण करने वाला होगा ।"

श्री तिआग मल्ल जी जब ईश्वर-आराधना में मग्न हो लम्बा समय एकाग्रचित्त हो जाते, तब श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब माता नानकी जी से अक्सर कहा करते थे कि "हमारे इस सुपुत्र ने बड़ा महान कार्य करना है, जिसकी यह अभी से तैयारी कर रहा है।"

शिक्षा-दीक्षा : श्री तिआग मल्ल जी की शिक्षा-दीक्षा श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब के कुशल निर्देशन में सम्पन हुई। इस संदर्भ में आप बहुत ही भाग्यशाली थे, क्योंकि आपको ब्रह्मज्ञानी बाबा बुड्ढा जी, महान विद्वान भाई गुरदास जी, सूफी फकीर साँई मियां मीर जी जैसे महापुरुषों से विद्या हासिल करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। गुरु-घर की परम्परा के अनुसार अल्पायु में ही पिता जी ने आपको साहित्य-पठन-लेखन, शस्त्राभ्यास, घुड़सवारी आदि का समुचित प्रशिक्षण देने का संपूर्ण प्रबंध किया। संत-सिपाही वाला ओजस्वी रूप, निडरता, धर्म-परायणता, ईश्वर में अटूट विश्वास, अदम्य साहस तथा निर्भयता वाले गुण व्यवहारिक रूप से गुरु-पिता जी से स्वाभाविक ही प्राप्त हो गए थे। इसके अतिरिक्त विदूषी माता नानकी जी से पौराणिक इतिहास एवं सिक्ख पंथ की विशेष जानकारी मिली। माता-पिता का आशीर्वाद, बड़े बहन-भाइयों का विशेष स्नेह आपके व्यक्तित्व को निरंतर निखारता चला गया और आप बहुमुखी प्रतिभा एवं प्रभावी व्यक्तित्व के स्वामी बन गए।

'तिआग मल्ल' से 'तेग बहादर' : १२ वर्ष की आयु तक श्री तिआग मल्ल जी कुशल घुड़सवार बन गए और पिता जी के साथ शिकार पर जाने लगे। श्री तिआग मल्ल जी ने अपनी इस अल्पायु में ही तीन युद्ध देख लिए थे। ज्ञात हो कि श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब ने किसी भी युद्ध के लिए कभी पहल नहीं की, लेकिन जब शाहजहाँ द्वारा सेना भेज कर आक्रमण किया गया तो गुरु जी द्वारा उसका प्रतिरोध करना अनिवार्य था। संकीर्ण मानसिकता वाले बादशाह शाहजहाँ ने साधारण विवादों को तूल देकर अर्थात् बढ़ा-चढ़ा कर अनावश्यक रूप से चार बार गुरु जी पर आक्रमण किया और चारों में ही उसे पराजय का मुँह देखना पड़ा। गुरु जी को चारों युद्धों में विजय हासिल हुई। युद्धों के हिंसक एवं वीभत्स रूप ने श्री तिआग मल्ल जी के बाल-मन पर विपरीत प्रभाव डाला, विशेष तौर पर तब, जब एक तरफ उनकी बहन बीबी वीरो जी का विवाह-समारोह चल रहा था और दूसरी ओर युद्ध में शहीद हुए सैनिकों का

अंतिम संस्कार किया जा रहा था।

श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब द्वारा चौथी लड़ाई करतारपुर में लड़ी गई। इस युद्ध में काले खान और पैंदे खान के नेतृत्व में मुगल सेना ने आक्रमण किया। इस युद्ध के संदर्भ में उल्लेखनीय तथ्य यह है कि यह वही पैंदे खान था, जो गुरु-घर का अनन्य सेवक रहा था और श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब ने इसका पुत्रों की भांति पालन-पोषण किया था, लेकिन पैंदे खान ने जिस थाली में खाया, उसी में छेद किया। वो विश्वासघाती बना। करतारपुर वाले युद्ध में श्री तिआग मल्ल जी ने बड़ी सक्रियता से भाग लिया तथा एक कुशल योद्धा की भांति तेग के अद्भुत जौहर दिखाकर दुश्मनों के छक्के छुड़ा दिए। युद्ध-भूमि में श्री तिआग मल्ल जी को वीरतापूर्वक लड़ते हुए और मुगल सैनिकों के दांत खट्टे करते हुए देखकर सिक्ख सैनिकों ने गुरु जी के समक्ष उनकी शूरवीरता की भूरि-भूरि प्रशंसा की। श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब भी अपने सुपुत्र का युद्ध-कौशल एवं बहादुरी देख अभिभूत हो गये। यही नहीं, माता नानकी जी की इस संदर्भ में प्रसन्नता का कारण यह रहा कि अपने सुपुत्र श्री तिआग मल्ल जी की वैराग्य-वृत्ति से चिंतित माता जी उन्हें बलशाली योद्धा के रूप में देख कर गदगद् थीं। श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब ने अपने सुपुत्र श्री तिआग मल्ल जी को 'तेग बहादर' नाम से उपमित कर सम्मानित किया। इस प्रकार पिता श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब द्वारा 'तिआग मल्ल' को 'तेग बहादर' नाम से विभूषित करना श्री गुरु तेग बहादर साहिब के संत-सिपाही स्वरूप का सुंदर सामंजस्य दर्शाता है।

कविता

मानवता की ढाल, धर्म की चादर !

धन्य-धन्य श्री गुरु तेग बहादर!
मानवता की ढाल, धर्म की चादर!
गुरु हरिगोबिंद साहिब के राज दुलारे!
माता नानकी जी की आँखों के तारे!
माता गुजरी जी के सिर के ताज!
रखी जिन्होंने मानवता की लाज!
त्यागी प्रवृत्ति, 'तिआग मल्ल' बचपन का नाम!
तेग के जौहर दिखा बने 'तेग बहादर' महान!
सतलुज के किनारे सुन्दर नगर बसाया।
आनंद की नगरी 'अनंदपुर' कहलाया।
'बाबा बकाला' में मन-साधना साधी।
नाम के रसिये, चित्त से अनुरागी।
पन्द्रह रागों में पावन बाणी उच्चारी।
त्याग-बैराग-अनुराग की जो है पिटारी।
अमृतमयी बाणी को पढ़-सुन कर
जो अमल में लाये!
लोक-परलोक वो अपना सफल बनाए!
गुरु जी का व्यक्तित्व, कृतित्व था बड़ा महान।
अप्रतिम, अद्वितीय था उनका बलिदान।
गुरु गोबिंद सिंघ जी ने क्या खूब फरमाया।
गुरु तेग बहादर सी क्रिया न कोई कर पाया।
धन्य-धन्य श्री गुरु तेग बहादर!
मानवता की ढाल, धर्म की चादर!

भक्त धंना जी

*–स. परमजीत सिंघ सुचिंतन**

भक्त धंना (धन्ना) जी का जन्म सन् १४१५ ई. (वैशाख सुदी ३, संवत् १४७२) में राजस्थान के टोंक जिले के धुआं कलां गाँव में हुआ था। धुआं कलां गाँव के बाहर, भक्त धंना जी की याद में सुन्दर गुरुद्वारा साहिब शोभायमान है। यह गुरुद्वारा उन्हीं खेतों में सुशोभित है, जिन खेतों में भक्त धंना जी खेती किया करते थे। आज भी धुआं कलां गाँव में, लगभग १८ बीघा (साढ़े सात एकड़) जमीन, भक्त धंना जी के नाम पर बताई जाती है। गुरुद्वारा साहिब के परिसर में वह कुआँ अभी भी मौजूद है, जिस कुएं के पानी से भक्त धंना जी अपने खेतों की सिंचाई किया करते थे। इस गुरुद्वारा साहिब की कार सेवा बाबा तारा सिंघ जी सरहाली वाले संप्रदाय से संबंधित बाबा लक्खा सिंघ, गुरुद्वारा अगमगढ़ साहिब, बड़गांव, कोटा, राजस्थान की निगरानी में, बाबा शेर सिंघ करवा रहे हैं। इस गुरुद्वारा साहिब के बिल्कुल सामने, भक्त धंना जी की याद में एक मंदिर बना हुआ है। गुरुद्वारा साहिब के पास ही भक्त धंना जी की याद में एक पनोरमा भी बना हुआ है। इस आलेख के लेखक को, अपनी राजस्थान-यात्रा के दौरान, १५ अप्रैल, सन् २०२३ को, इन सभी स्थानों के दर्शन करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था।

भक्त धंना जी बहुत भोले-भाले और सरल स्वभाव वाले थे। आपके पिता जी खेतीबाड़ी किया करते थे। भक्त धंना जी भी अपने पितापुरखी काम को संभालते हुए, गाय चराने के लिए जाते थे तथा खेतीबाड़ी किया करते थे। आप जी बचपन से ही धार्मिक विचारों के धारक बन गए थे। बचपन से ही आपकी लगन परमात्मा की भजन-बंदगी में लग गई थी।

भक्त धंना जी जब गाय चराने जाते थे तो देखते थे कि त्रिलोचन नामक एक पंडित ठाकुर-पूजा करने के लिए आता है। वह पंडित पहले खुद स्नान करता है, फिर मूर्तियों को स्नान करवा कर ठाकुरों की पूजा करता है। त्रिलोचन पंडित को रोजाना पूजा करते हुए देख कर, भक्त धंना जी ने एक दिन पूछ ही लिया कि "आप रोजाना यहां आकर क्या करते हैं?" आगे से त्रिलोचन पंडित कहने लगा कि "धंना! तुम्हें नहीं पता, मैं तो ठाकुरों की पूजा करता हूं!" भक्त धंना जी के यह पूछने पर कि ठाकुरों की पूजा करने से क्या प्राप्त होता है, त्रिलोचन पंडित कहने लगा कि "जो भी व्यक्ति ठाकुर की पूजा करता है, उसकी सभी इच्छाएं पूरी

* *७६. फेस-३, अर्बन अस्टेट, दुग्गरी, लुधियाना– १४१०१३, फोन: ९७७९१-२४५००*

हो जाती हैं।" यह बात सुनकर, भक्त धंना जी त्रिलोचन पंडित से कहने लगे कि "यदि ठाकुर मन की सभी इच्छाओं को पूरा कर देता है तो एक ठाकुर मुझे भी दे दो! मैं भी ठाकुर की पूजा किया करूंगा, ताकि मेरे मन की इच्छाएं भी पूरी हो जाएं।"

त्रिलोचन पंडित ने भक्त धंना जी को सीधा-सादा व भोला-भाला जानते हुए, ठाकुर देने से टालमटोल किया तथा भक्त धंना जी से कहा कि "ठाकुर की पूजा करना इतना आसान नहीं है, बहुत मुश्किल काम है। सुबह जल्दी उठना पड़ता है, धूप-दीप करके और ठाकुर को भोग लगवा कर ही अन्न-जल ग्रहण करना पड़ता है।"

प्रेम-भक्ति की दृढ़ता और पवित्र मन वाले भक्त धंना जी ने, त्रिलोचन पंडित की सभी बातें मान ली। त्रिलोचन पंडित बहुत चालाक था। उसने भक्त धंना जी के सामने एक शर्त रख दी कि भक्त धंना जी को ठाकुर के बदले में एक दुधारू गाय त्रिलोचन पंडित को देनी होगी, तभी वह उन्हें ठाकुर देगा। भक्त धंना जी ने त्रिलोचन पंडित की यह शर्त भी स्वीकार कर ली।

त्रिलोचन पंडित ने भक्त धंना जी से पीछा छुड़ाने के लिए, एक पत्थर उठाया और कपड़े में लपेट कर भक्त धंना जी को दे दिया तथा बदले में भक्त धंना जी से एक दुधारू गाय ले ली। भोले-भाले और सीधे-सादे भक्त धंना जी, यह सौदा कर खुशी-खुशी घर आ गए।

घर पहुंच कर, भक्त धंना जी ने खुद स्नान किया। फिर ठाकुर को स्नान करवा कर, ऊंचे स्थान पर विराजमान कर दिया तथा भोजन और लस्सी थाल में सजा कर, ठाकुर के सामने रख दिया। फिर, दो हाथ जोड़कर प्यार सहित विनती करने लगे कि "ठाकुर जी! कृपा करके, भोजन व लस्सी स्वीकार करें!" भक्त धंना जी सीधे-सादे स्वभाव के मालिक थे। उन्हें यह पता नहीं था कि त्रिलोचन पंडित ठाकुर के आगे पदार्थ रख कर, भोग लगाने के लिए विनती करता है और फिर स्वयं ही ये पदार्थ, ठाकुर की मूर्ति के मुंह से छुआ देता है और इसी को ही वो भोग लगाना कहता है। भक्त धंना जी तो सचमुच ठाकुर को भोजन खिला कर ही खाना चाहते थे। आख़िर, भक्त धंना जी दो हाथ जोड़कर ठाकुर से बार-बार विनती करने लगे कि "ठाकुर जी! यदि आप मेरे से नाराज़ हैं (भक्त धंना जी को लगा कि ठाकुर जी उनसे नाराज़ होकर भोजन ग्रहण नहीं कर रहे है) तो मैं कैसे खुश रह सकता हूं! यदि आप भोजन ग्रहण नहीं करेंगे तो मैं भी मुंह में कुछ नहीं डालूंगा।" कहा जाता है कि भक्त धंना जी की दृढ़ता, सीधे-सादे और भोले-भाले स्वभाव तथा उनके निर्मल प्रेम के कारण, उनके मन के कपाट खुल गए। उन्हें अपने हृदय में बसते प्रभु का अनुभव हुआ। इस अनुभव ने जता दिया कि जिसे वे बाहर ढूंढ रहे हैं वो तो उनके अंदर बस रहा है। बस, फिर क्या था, उन्हें यूं लगा कि जैसे अकाल पुरख ने स्वयं उन्हें प्रत्यक्ष

दर्शन दे दिए हों और भोजन स्वीकार कर लिया हो। भक्त धंना जी अंतरध्यान अवस्था में आनंदित हो गए, गदगद हो गए।

भाई गुरदास जी ने इस सारे वृत्तांत को अपनी दसवीं वार की तेरहवीं पउड़ी में निम्नानुसार अंकित किया है :

बाह्मणु पूजै देवते धंना गऊ चरावणि आवै।
धंनै डिठा चलितु एहु पूछै बाम्हणु आखि सुणावै।
ठाकुर दी सेवा करै जो इछै सोई फलु पावै।
धंना करदा जोदड़ी मै भि देह इक जे तुधु भावै।
पथरु इकु लपेटि करि दे धंनै नो गैल छुडावै।
ठाकुर नो न्हावालि कै छाहि रोटी लै भोगु चढ़ावै।
हथि जोड़ि मिनति करै पैरी पै पै बहुतु मनावै।
हउ भी मुहु न जुठालसां तू रुठा मै किहु न सुखावै।
गोसाई परतखि होइ रोटी खाहि छाहि मुहि लावै।
भोला भाउ गोबिंदु मिलावै।।१३।।१०।।

यहां यह बात ध्यान देने योग्य है कि भाई गुरदास जी की रचनाओं के अंदर, पउड़ी की अंतिम पंक्ति में समूची पउड़ी का सारांश दिया होता है। इसी तरह इस पउड़ी की अंतिम पंक्ति में भाई गुरदास जी कहते हैं कि "भोला भाउ गोबिंदु मिलावै" अर्थात् भक्त धंना जी भोले-भाले और सीधे-सादे स्वभाव वाले हैं। उनके अकाल पुरख के प्रति निर्मल प्रेम के कारण, उनका मिलाप अकाल पुरख के साथ हुआ है।

इससे संबंधित श्री गुरु अरजन देव जी के बहुत सुंदर वचन हैं :

धनै सेविआ बाल बुधि।।

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ११९२)

यह बात तो ठीक है कि भक्त धंना जी के आध्यात्मिक सफ़र की शुरूआत पंडित त्रिलोचन की ओर से दिए गए एक पत्थर, जिसे भक्त धंना जी ने ठाकुर समझ कर स्वीकार किया, से हुई परन्तु आपको अकाल पुरख की भक्ति करने की प्रेरणा, भक्त नामदेव जी, भक्त कबीर जी, भक्त रविदास जी और भक्त सैण जी की जीवन-गाथाएं सुन कर मिली। भक्त धंना जी इन भक्त साहिबान के जीवन से बहुत प्रभावित थे।

इस संबंध में श्री गुरु अरजन देव जी द्वारा उच्चरित शबद श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी में शोभायमान है। श्री गुरु अरजन देव जी फरमान करते हैं :

गोबिंद गोबिंद गोबिंद संगि नामदेउ मनु लीणा।।
आढ दाम को छीपरो
होइओ लाखीणा।।१।।रहाउ।।...
इह बिधि सुनि कै जाटरो उठि भगती लागा।।
मिले प्रतखि गुसाईआ धंना वडभागा।।

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी, पन्ना ४८७)

भक्त धंना जी समकालीन भक्तों, जैसे कि भक्त रामानंद जी, भक्त कबीर जी, भक्त रविदास जी, भक्त सैण जी आदि की संगत करके, निराकार अकाल पुरख के उपासक बन गए। आप जी ने काशी (बनारस) जाकर, भक्त रामानंद जी से गुरु-दीक्षा प्राप्त की। गुरु-दीक्षा प्राप्त कर, आप जी

आध्यात्मिक ऊंचाइयों को छूने लगे।

श्री गुरु रामदास जी अपनी बाणी में कहते हैं कि भक्त नामदेव जी, भक्त जैदेव जी, भक्त कबीर जी, भक्त त्रिलोचन जी, भक्त रविदास जी, भक्त धंना जी, भक्त सैण जी आदि जो-जो भी संगत में जुड़े, वे भाग्यशाली बनते गए और अकाल पुरख को मिलते गए :

नामा जैदेउ कंबीरु त्रिलोचनु अउजाति रविदासु चमिआरु चमईआ।।

जो जो मिलै साधू जन संगति धनु धंना जटु सैणु मिलिआ हरि दईआ।।

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी, पन्ना ८३५)

गुरु रामदास जी नाम-सुमिरन की महिमा बताते हुए, इस बात की पुष्टि करते हैं कि अकाल पुरख की भजन-बंदगी करने से, भक्त धंना जी और भक्त बाल्मीकि जी इस भवसागर से पार हो गए :

मेरे मन नामु जपत तरिआ।।

धंना जटु बालमीकु बटवारा गुरमुखि पारि पइआ।।

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी, पन्ना ९९५)

भक्त धंना जी कुल ६० वर्ष की सांसारिक आयु भोग कर, सन् १४७५ ई. में परलोक गमन कर गए।

बाणी भक्त धंना जी की : श्री गुरु ग्रंथ साहिब में भक्त धंना जी के तीन शबद शोभायमान हैं। इनमें से दो शबद आसा राग में हैं और एक शबद धनासरी राग में है। भक्त धंना जी ने पहले शबद में, एक निराकार व निर्गुण अकाल पुरख की भक्ति करने का उपदेश दिया है :

—भ्रमत फिरत बहु जनम बिलाने तनु मनु धनु नही धीरे।।

लालच बिखु काम लुबध राता मनि बिसरे प्रभ हीरे।।. . . *(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ४८७)*

दूसरे शबद में भक्त धंना जी ने उदाहरण देकर यह समझाया है कि अपनी किरत के लिए, अकाल पुरख पर ही भरोसा रखना है :

—रे चित चेतसि की न दयाल दमोदर बिबहि न जानसि कोई।।

जे धावहि ब्रहमंड खंड कउ करता

करै सु होई।। . . .

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ४८८)

तीसरे शबद में, भक्त धंना जी ने हम सभी को यह प्रेरणा दी है कि सभी सांसारिक ज़रूरतों को पूरा करने के लिए, एक अकाल पुरख के पास ही विनती करनी है, किसी और के पास नहीं :

—गोपाल तेरा आरता।।

जो जनु तुमरी भगति करंते

तिन के काज सवारता।।. . .

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ६९५)

भक्त धंना जी हम सभी के लिए एक प्रकाश-स्तम्भ व प्रेरणा-स्रोत हैं। हम सभी को भक्त धंना जी के जीवन तथा उनकी बाणी में से मिल रहे संदेशों को अपने जीवन में अपना कर लाभान्वित होने का प्रयास लगातार करते रहना चाहिए।

पैग़ाम-ए-बैसाखी : मानसिकता और ज़मीर की आज़ादी

- स. गुरचरनजीत सिंघ (लांबा)*

साहिब श्री गुरु नानक देव जी महाराज के आगमन के समय जगत में बहुत-से धर्म प्रचलित थे। धर्मों के वर्ग भी बहुत थे। वर्गों के अंदर अनगिनत वर्ग (उपवर्ग) थे। मत-मतांतर भी बेशुमार थे। कर्मकांडों की संख्या भी बहुत थी। इतना सब कुछ होते हुए, सत्य धर्म, धर्म का सत्य मौजूद नहीं था। इस सरज़मीन पर दो महान फलसफे सामने आए— 'रब्बुल आलमीन' और 'वसुधैव कुटुम्बकम'। दोनों का लबो-लबाब एक ही था कि सारा संसार एक कुटुंब, परिवार या कुनबा है और सबका ईश्वर एक है। चाहिए तो यह था कि इन दोनों में एकता होती और एक दूसरे को साथ लेकर ईश्वर की इबादत और लोक-सेवा करते। मगर, ऐसा न होकर सब टकराव में बदल गया। एक दूसरे को नीचा दिखाते-दिखाते, धर्म के असली तत्व से दूर हो गए। गुरमति का आशय तो "साध समूह प्रसंन फिरैं जग सत्र सभै अवलोक चपैंगे॥" (श्री दसम ग्रंथ साहिब) था। वाहिगुरु ने यह धरती भले पुरुषों के निवास के लिए बनाई थी, परन्तु भक्त कबीर जी वचन करते हैं— "कबीर धरती साध की तसकर बैसहि माहि॥" इतना ही नहीं इस धरती को भी म्लेच्छ-भूमि और देव-भूमि में बाँट दिया गया। आम बोलचाल की भाषा भी देव-भाषा व म्लेच्छ-भाषा में बाँट दी गई। संसार में विभाजन शिखर पर जा पहुँचा। ग़ैरत व आत्माभिमान से विहीन जनता श्वासहीन होकर बेजान हजूम बन चुकी थी— "सचु किनारे रहि गिआ खहि मरदे बाम्हण मउलाणे।" जगत जलंदे की ऐसी दशा में जगत-गुरु साहिब श्री गुरु नानक देव जी का प्रकाश हुआ। गुरु साहिब जी ने इस उद्देश्य के लिए जगह-जगह संगत स्थापित की। श्री गुरु तेग़ बहादर साहिब जी तक इस संगत को रूहानी सिद्धांत, बाणा व बाणी, केंद्रीय स्थान तथा कौमी अस्तित्व के लिए आवश्यक सभी संसाधनों द्वारा सराबोर किया।

आरम्भ से ही हाकिम अपने आप को ईश्वर ही समझने लगे थे। पश्चिमी देशों में भी कि 'राजा कभी गलती कर ही नहीं सकता', आम जनता की मनोवृत्ति और मानवीय आचरण की हीनता इस स्तर तक गिर चुकी थी। अकबर के शासन-काल में एक ग्रंथ 'अल्लोपनिषद' की रचना की गई। इसमें लिखा गया :

दिलीशवरो वा जगदीशवरो वा मनोरथान्य पूरयितुं समर्थः।

अन्यन पैतयत परिदीयमान, शाकाय बासयथालव्वणाय वाशथात।

यानि कि जो दिलीशवर या दिल्ली का बादशाह है वह परमात्मा है और सभी उद्देश्यों को पूर्ण करने

*New Jersey. USA. Ph : +1 9736990950, Email: santsipahi@ gmail. com

वाला है। बाकी के राजा तो दाल, सब्ज़ी, नमक आदि छोटी चीजें दे सकते हैं। यह रुचि इतने संकीर्ण रूप में आम जनता के मन में घर कर चुकी थी कि इस काल में कुछ ब्राह्मण थे, जो कहा करते थे कि परमात्मा के दर्शन किये बिना वे पानी तक नहीं पीते, इसलिए ये दरबार में आकर बादशाह के दर्शन कर अपने आप को भाग्यवान समझते थे। इस वृत्ति या भ्रम को पूर्णत: दूर करने के लिए श्री गुरु तेग़ बहादर साहिब ने अद्वितीय शहादत दी— "ठीकरि फोरि दिलीसि सिरि प्रभ पुर कीया पयान॥"

उस समय के धार्मिक और राजनैतिक हालात का संकेत श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी महाराज ने दिया है :

जैसि जूनि इक देत बखनियत॥
तियो इक जूनि देवता जनियत॥
जैसे हिंदूआ नौ तुरकानां॥
सभहिंन सीस काल जरवाना॥५॥
कबहूँ दैंत देवतन मारै॥
कबहूँ दैंतन देव संघारै॥
देव दैंत जिन दोऊ संघारा॥
वही पुरख भि पतिपाल हमारा॥६१॥१॥

(श्री दसम ग्रंथ साहिब)

उस समय मानसिकता या ज़मीर की आज़ादी की तो बात करनी ही अनहोनी बात थी। आम जनता ने जो हीनता, ग़ुलामी व ज़ुल्म सहन करना, अपनी नियति या भाग्य ही समझ लिया था, उसे पूरी तरह से दूर करने के लिए कलगीधर पिता श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी महाराज ने बैसाखी वाले दिन इस गुरु की संगत को 'वाहिगुरु जी का ख़ालसा' बना दिया :

गुरु सिमरि मनाई कालका खंडे की वेला।*
पीओ पाहुल खंडधार होइ जनम सुहेला।
संगति कीनी ख़ालसा मनमुखी दुहेला।
वाह वाह गोबिंद सिंघ आपे गुरु चेला॥

(भाई गुरदास जी, वार ४१:१७)

रूहानियत के संसार में एक अजब करिश्मा घटित हुआ। वो कैसा नज़ारा होगा जब पंथ का वाली (मालिक) ख़ुद ही अमृत की याचना के लिए अपने द्वारा सृजित ख़ालसे के सम्मुख बीर आसन होकर नत्मस्तक हुआ होगा। इस ऐतिहासिक वार्ता को गुरु साहिब का समकालीन कवि कंकण बयान करता है :

जिह बिध पाहुल गुर दई तिह बिधि तिनसों लीन।
आपु सिख तिनका भया इही काम गुर कीन।।२१७॥

'आपे गुरु चेला' के इस करिश्मे का वर्णन करते हुए कवि कंकण कलगीधर पिता को वाहिगुरु कह कर सम्बोधित करता है :

वाहिगुरू इह बचन सुनाया।
गुरू खालसा नाम धराया।
तुम मेरे मैं तुमरा हूआ।
तुमरा हमरा गुरू न दूआ॥२१८॥
सिख सभै हमरे गुर हो तुम,
मैं हो गुरू जग माहि तुमारा।
जो करि है तुमरा कोऊ दरशन,
जानो कीया तिन दरसन हमारा॥२२४॥

इस ख़ालसे को अपना रूप-स्वरूप देकर सतिगुरु सच्चे पातशाह साहिब श्री गुरु गोबिंद सिंघ

** गुरु दास पाठ भी है।*

जी महाराज ने इसके मन में से हीनता की भावना का नामो-निशान भी न रहने दिया। इस संत सिपाही को अकाल पुरख के गुणों से सराबोर कर दिया :

खालसा होवे ख़ुद खुदा ज़िम ख़ूबी खूब खुदाइ।
ईन न मानै आन की बिन सच्चे पातसाहि॥

गुरु साहिब को बादशाहों के साथ कोई दिक्कत नहीं थी, जब तक वे प्रजा के साथ इंसाफ़ करते रहे और उनके अधिकारों के रक्षक बन कर रहे। जब वे अहंकार, तकब्बुर और ज़ुल्म पर आमादा हो गए तो गुरु-घर के साथ टकराव भी हुआ। अब यह 'वाहिगुरु जी का ख़ालसा' मानसिकता और ज़मीर के पक्ष से पूरी तरह से स्वतंत्र हो चुका था। यह संभव है कि किसी शख़्स का जिस्म बंधनों में हो सकता है, लेकिन अहम है कि उसकी मानसिकता और ज़मीर को ग़ुलाम नहीं बनाया जा सकता। यह करामात या युग-परिवर्तक क्रांति थी, जो गुरु साहिब ने ख़ालसे की झोली में डाली। शारीरिक तौर पर श्री गुरु नानक देव जी, श्री गुरु अरजन देव जी, बाबा जोरावर सिंघ जी, बाबा फतिह सिंघ जी, माता गुजरी जी और बाद में अनगिनत सिंघ-सिंघनियां शारीरिक तौर पर बंदीखाने में रहे, परन्तु उनकी मानसिकता और ज़मीर को कोई कैद नहीं कर सका। छोटे साहिबज़ादों ने वज़ीर खान की कचहरी में सिर झुकाने की बजाय पहले अपने पैर अंदर किए। फिर ज़मीर की आज़ादी के साक्ष्य के रूप में 'जयकारा' गुंजा दिया। इसीलिए, कौमों की भी यदि मानसिकता और ज़मीर आज़ाद हो तो बंधन भी टूट ही जाते हैं। यदि ज़मीर ने ही ग़ुलामी स्वीकार कर ली तो वे बंधन वैसे के वैसे रहेंगे।

आज़ाद ज़मीर की एक दिलचस्प कहानी है। देश की आज़ादी की लड़ाई के दौरान के एक राजनैतिक नेता का पीछा पुलिस कर रही थी। उसे भागता हुआ देख कर एक वेश्या ने घर का दरवाज़ा खोल कर उसे अंदर बुला लिया। पुलिस आई और पूछा कि यहाँ कोई आया है? उसने साफ़ मना कर दिया और पुलिस चली गई। बाद में उस नेता ने पूछा कि "कमाल है! तूने एक वेश्या होकर ऐसा क्यों कहा?" उसने जवाब दिया— "मैं जिस्म-फ़रोश हूँ, ज़मीर-फ़रोश नहीं।" आज कई ऐसे पंथ-विरोधी लोग भी हैं जो पंथ का लबादा ओढ़ कर निजी स्वार्थ हेतु ज़मीर-फ़रोशी के लिए हर समय तत्पर रहते हैं, बस, खरीददार चाहिए। यदि दुनियावी स्तर पर बहुत कुछ है, मगर ज़मीर मरी हुई है तो ऐसे मनुष्य की हालत "फलीअहि फुलीअहि बपुड़े भी तन विचि सुआह।।" वाली ही है।

सतिगुरु सच्चे पातशाह ने बैसाखी वाले दिन ख़ालसे को आज़ाद मानसिकता व जिंदा ज़मीर की आज़ादी वाले गुण प्रदान कर 'राज करेगा ख़ालसा' के ईश्वरीय निशाने की दाति प्रदान की। इसने न केवल संसार के नक्शे को ही बदला, बल्कि आने वाले इतिहास को भी बदल कर रख दिया। यदि मानसिकता और ज़मीर की आज़ादी बरकरार है तो यह धार्मिक और राजनैतिक आज़ादी की गवाह है। हक, इंसाफ़, मानवाधिकारों के लिए संघर्षरत् ख़ालसा कुर्बानियां करता रहेगा। यह पैग़ाम है बैसाखी का। बैसाखी का पवित्र दिवस ख़ालसे की सृजना का दिवस है, जिसने कौम को मानसिकता और ज़मीर की आज़ादी की दृढ़ता प्रदान की।

नाम-अमृत . . . खंडे का अमृत

*–डॉ. परमजीत कौर**

'अमृत' का अर्थ है— मृत्यु से रहित।

भाई साहिब भाई कान्ह सिंघ नाभा के अनुसार— "जिसे पीकर कोई अमर हो जाए, उसका नाम 'अमृत' है। गुरमति में करतार (प्रभु) के नाम का रहस्य तथा आत्म-ज्ञान 'अमृत' माना गया है।'' (गुरमत मारतंड, भाग १, पृष्ठ ७५)

गुरु साहिबान के अनुसार आत्मिक जीवन देने वाला प्रभु का नाम ही 'अमृत' है। जो आत्मिक मृत्यु से आत्मिक अमरता एवं अज्ञान के अन्धकार से ज्ञान के प्रकाश की ओर ले जाए तथा जीवन में फैले हुए अहंकार व मोह रूपी ज़हर को निकालकर जीवन को अमृतमयी बना दे, निश्चय ही वह 'अमृत' है :

—हरि अंम्रित रसु पाइआ मुआ जीवाइआ
फिरि बाहुड़ि मरणु न होई।।

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ४४७)

—हउमै माइआ बिखु है मेरी जिंदुड़ीए
हरि अंम्रिति बिखु लहि जाए राम।।

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ५३८)

—अंम्रितु नामु निधानु है मिलि पीवहु भाई।।
जिसु सिमरत सुखु पाईऐ सभ तिखा बुझाई।।

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ३१८)

प्रभु के प्रेम में रंगे हुए मनुष्य के लिए अन्य कोई दूसरा अमृत नहीं है :

जिन वडिआई तेरे नाम की ते रते मन माहि।।
नानक अंम्रितु एकु है दूजा अंम्रितु नाहि।।

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना १२३८)

नाम-अमृत की प्राप्ति ही मानव का लक्ष्य है। यह नाम रूपी अमृत गुरु की मति के अनुसार चलने पर मिलता है। जीवन को अमृतमयी बनाने के लिए गुरबाणी के अनुसार जीवन को बनाना पड़ता है :

अंम्रित नामु महा रसु मीठा
गुरमती अंम्रितु पीआवणिआ।।

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना १२४)

जैसे दूध को बार-बार हिलाकर मक्खन निकाला जाता है, वैसे ही जो मनुष्य बार-बार यत्न करके मन को विकारों की ओर से हटाकर नाम जपता है, वह गुरमति के अनुसार नाम-अमृत का पान करता है :

मेरे राम ऐसा खीरु बिलोईऐ।।

**६२०, गली नं. १, छोटी लाईन, संतपुरा, यमुनानगर (हरियाणा)— १३५००१, फोन : ९८१२३-५८१८६*

गुरमति मनूआ असथिरु राखहु इन बिधि अंम्रितु पीओईऐ।। (श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ३३२)

यदि गुरमति के अनुसार जीवन न बनाया जाए तो काम, क्रोध, लोभ, मोह अहंकार, निंदा आदि के कारण आत्मिक मृत्यु का भय सदा बना रहता है। गुरमति के अनुसार चलने वाली जीवन-प्रणाली ऐसी है कि इसे माया का मोह हिला नहीं सकता। श्री गुरु नानक देव जी मन को वश में करने की विधि बता रहे हैं :

इहु मनु ईटी हाथि करहु फुनि नेत्रउ नीद न आवै।।
रसना नामु जपहु तब मथीऐ इन बिधि अंम्रितु पावहु।। (श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ७२८)

जो मनुष्य गुरमति के अनुसार चलते हुए, सदैव प्रभु पर विश्वास करता हुआ आत्मिक स्थिरता में टिक कर परमात्मा का गुण-कीर्तन करता है, नाम-सुमिरन द्वारा प्रभु के साथ सम्बंध स्थापित करता है, वह नाम-अमृत का पान करता है तथा सुमिरन से प्राप्त होने वाले आत्मिक आनंद का अनुभव करता है :

गुरमति चाल निहचल नही डोलै।।
गुरमति साचि सहजि हरि बोलै।।
पीवै अंम्रितु ततु विरोलै।।
(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना २२७)

चतुराइआं, पाखण्ड, भेस आदि से नाम-अमृत प्राप्त नहीं होता। प्रभु उसी पर कृपा करता है, जो प्रभु-दरसाए मार्ग पर चलता है तथा नाम-अमृत का अभिलाषी बनता है :

हरि हरि आपि दइआ करि देवै ता अंम्रितु हरि रसु चखीऐ।। (श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना १७०)

जैसे-जैसे नाम-रस रूपी अमृत का पान किया जाता है, मन शांत तथा संतुष्ट होता चला जाता है, माया की तृष्णा समाप्त हो जाती है, मन सांसारिक पदार्थों की ओर नहीं भागता। जो भी नाम-अमृत का आनंद लेता है, वह आत्मिक मृत्यु नहीं मरता :

जो जो पीवै सो त्रिपतावै।।
अमरु होवै जो नाम रसु पावै।।
(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना १०१)

मायिक पदार्थ नाम-अमृत की बराबरी नहीं कर सकते। गुरमति में भौतिक पदार्थों को ज़हर कहा गया है :

नाम धन बिनु होर सभ बिखु जाणु।।
(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ६६४)

जिसे परमात्मा के नाम का रस आ गया उसे किसी भी भौतिक सुख की लालसा नहीं रह जाती :

हरि हरि अंम्रितु पी त्रिपतासे सभ लाथी भूख भुखानी।। (श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ६६७)

ऐसे जीव का जीवन अमृतमयी हो जाता है। प्रभु के नाम में लीन, पवित्र, छल-कपट से रहित, सरल व परोपकारी जीवन का आनंद

अपना ही है। उससे मिलने वाली आत्मिक शांति तथा आत्मिक आनंद का कोई मुकाबला नहीं। इसका आस्वादन करके ही जाना जा सकता है :

जिनी चाखिआ तिनी सादु पाइआ बिनु चाखे भरमि भुलाइ।। (श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ३३)

जो जीव सदा अपने मन के पीछे लगकर समय व्यतीत कर देता है, नाम-अमृत की प्राप्ति के मार्ग पर कदम नहीं रखता, उसकी तृष्णा, भूख कभी नहीं मिटती। वह सदैव अहंकारग्रस्त रहता है तथा दुख सहन करता है :

गुर परसादी अंम्रितु नही पीआ त्रिसना भूख न जाई।।

मनमुख मूढ़ जलत अहंकारी हउमै विचि दुखु पाई।।

आवत जात बिरथा जनमु गवाइआ दुखि लागै पछुताई।। (श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना १२६५)

खंडे का अमृत : नाम-अमृत की प्राप्ति ही जीवन का लक्ष्य है तथा परमात्मा की कृपा से गुरमति-मार्ग पर चलने से यह दाति प्राप्त होती है तो फिर खंडे-बाटे का अमृत छकना क्यों जरूरी है? यह प्रश्न आज बार-बार उठाया जा रहा है। वास्तव में खण्डे-बाटे की पाहुल नाम-अमृत की प्राप्ति का पहला चरण है। गुरु के सिक्ख के लिए श्री गुरु ग्रंथ साहिब ही गुरु है :

बाणी गुरू गुरू है बाणी विचि बाणी अंम्रितु सारे।।

गुरु बाणी कहै सेवकु जनु मानै परतखि गुरू निसतारे।।

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ९८२)

विधिवत् गुरु वाला बनने के लिए गुरु-दीक्षा का संस्कार सिक्खी का जरूरी अंग है :

बिनु गुर दीखिआ कैसे गिआनु।।

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ११४०)

सिक्ख रहित मर्यादा के अनुसार जन्म, विवाह तथा मरण-संस्कार के समान अमृत की दीक्षा लेनी भी एक महत्वपूर्ण संस्कार है। श्री गुरु नानक देव जी के समय यह संस्कार चरणामृत द्वारा सम्पन्न किया जाता था। भाई गुरदास जी के अनुसार :

चरन धोइ रहरासि करि चरणाम्रितु सिखां पीलाइआ। (वार १:२३)

इस प्रकार अमृत-गुरु-दीक्षा का यह सफर चरणामृत से खण्डे-बाटे के अमृत तक का है तथा मंजिल-प्राप्ति का सफर खण्डे के अमृत से नाम-अमृत तक का है। खण्डे की पाहुल छककर सिक्ख द्वारा गुरु के साथ संबंध स्थापित किया जाता है। गुरु के साथ जुड़कर गुरु का सिक्ख नाम-अमृत की प्राप्ति की डगर पर अपना पहला कदम रखता है, उसका जीवन अनुशासित तथा नियमित हो जाता है। नित्य अमृत बेला में उठकर वाहिगुरु का

सुमिरन करने से मन को मानसिक शान्ति तथा संतुष्टि मिलती है। पाँच बाणियों का पाठ जीवन को गुरमति-गाडी राह पर ले जाता है।

नियमित रूप से नित्य गुरबाणी सुनने, पढ़ने तथा गायन करने से इन्द्रियों से अमृत-रस का आनंद आने लग जाता है और वे अन्य विषयों के रसों से संकोच करने लगती हैं, अपने को उनसे हटाने का यत्न करती हैं। सारा दिन परमात्मा का प्रेम तथा निर्मल भय मन में बना रहता है। जीवन में सादगी, सरलता तथा पवित्रता आ जाती है।

कुछ लोग यह गलत धारणा रखते हैं कि खण्डे-बाटे का अमृत छकना जरूरी नहीं है। अमृत-पान किए बिना ही वे सदाचारी हैं तथा नित्यनेम का निर्वाह करने वाले हैं। अमृत-गुरु-दीक्षा लेकर जीवन में परिवर्तन अवश्य आता है, यह अटल सच्चाई है, मगर परिवर्तन धीरे-धीरे आता है। यदि सतिगुरु के घर में जन्म लेकर, गुरु वाला बनकर भी कोई नियमों का निर्वाह नहीं करता, अमृत के प्रण को नहीं निभाता, तो ऐसा पाखंडी मनुष्य अपने कर्मों का फल स्वयं प्राप्त करेगा। ऐसे मनुष्यों को देखकर दूसरे सजा क्यों भुगतें? नित्यनेमी तथा सदाचारी जीव यदि गुरु वाले नहीं बनते तो निश्चय ही वे अपने आप को सज़ा दे रहे हैं, स्वयं को गुरु से दूर रखने की सजा। मानव-जन्म लेकर भी कई लोग चोर, जुआरी, कपटी, धोखेबाज हैं, लुटेरे तथा डाकू हैं। इसका मतलब यह तो नहीं कि इनको देखकर यह समझ लिया जाए कि मानव-जन्म लेना ही व्यर्थ है। आज स्वयं को गुरु का सिक्ख कहलाने वाले भ्रम में उलझ कर अपनी गौरवमयी विरासत को भुलाकर एक भीड़ का हिस्सा बनते जा रहे हैं तथा अमृत को छोड़कर विष का संग्रह करने में लगे हुए हैं और दुखी रहते हैं :

अंम्रितु तजि बिखु संग्रहै करतै आपि खुआइआ।। (श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ६४४)

यह विषयों का जहर ही है जो जीवन को गलत राह पर ले जा रहा है। आज जीवन के मूल्य बदल गए हैं। सादगी, संतुष्टि, त्याग आदि का कोई महत्व नहीं रहा। तृष्ण का अंत नहीं है। फैशनप्रस्ती सीमा पार कर गई है। दिखावा तथा लोकाचार जिंदगी की मंजिल बनता जा रहा है। प्रत्येक सिक्ख विषयों के जाल से मुक्त होकर प्रभु के साथ जुड़े, माया-ज़हर को छोड़कर नाम-अमृत का पान करे, यही समय की आवश्यकता है।

अमृत छकना बंधन नहीं, छुटकारा है, मुक्ति का संकेत है . . . मोह के बंधनों से, अज्ञानता तथा विष रूपी विषयों के जाल से।

जोशीमठ का गुरुद्वारा कैसे बना?

*–डॉ. परमवीर सिंघ**

जोशीमठ भारत का एक प्राचीन नगर है, जो कि श्री हेमकुंट साहिब की यात्रा करने वाले सिक्ख श्रद्धालुओं के लिए अहम पड़ाव है। इस नगर में हिंदू धर्म के प्राचीन मंदिर भी मौजूद हैं, जिनमें से एक भगवान नरसिंघ और दूसरा आदि शंकराचार्य से सम्बन्धित है। बद्रीनाथ और श्री हेमकुंट साहिब को जाने वाले रास्ते पर मौजूद यह नगर एक पड़ाव के तौर पर सामने आता है, जहाँ सिक्ख और हिंदू धर्म के श्रद्धालु यात्री निवास करते हैं।

सिक्ख धर्म से सम्बन्धित यहाँ कोई ऐतिहासिक स्थान मौजूद नहीं है, मगर श्रद्धालुओं को सुविधा प्रदान करने के लिए यहाँ पर एक गुरुधाम का निर्माण किया गया था, जिसे पहले 'दुष्ट-दमन धाम' कहा जाता था, और वर्तमान समय में यह 'गुरुद्वारा श्री हेमकुंट साहिब, जोशीमठ' नाम से प्रसिद्ध है। इस स्थान से आगे श्री हेमकुंट साहिब जाने के लिए श्री गोबिंद घाट अहम पड़ाव है। जोशीमठ से आगे यह स्थान १८-२० किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। इससे पहले ऋषिकेश के बाद श्रीनगर ही एक ऐसा स्थान है जहाँ संगत के लिए लंगर और निवास की सुविधा उपलब्ध थी। श्रीनगर के गुरुद्वारा साहिब से जोशीमठ की दूरी लगभग १५० किलोमीटर है।

प्रश्न पैदा होता है कि श्रद्धालुओं के लिए गुरुद्वारा श्री गोबिंद घाट में एक पड़ाव मौजूद था तो इससे थोड़ी दूर पहले ही इस नगर में गुरुद्वारा साहिब स्थापित करने की क्या ज़रूरत पड़ गई थी या रास्ते में किसी अन्य स्थान पर गुरुद्वारा साहिब की स्थापना क्यों नहीं की गई? प्राचीन गज़टियर तथा अन्य दस्तावेज़ों से जानकारी मिलती है कि उत्तराखंड की चोटियों पर स्थित धार्मिक स्थानों की यात्रा करने के लिए जो मार्ग वर्तमान समय में नज़र आ रहे हैं, प्राचीन समय में वे मौजूद नहीं थे। ऋषिकेश के बाद श्रीनगर तक तो मोटर आ जाती थी, मगर इससे थोड़ा आगे जाकर पैदल यात्रा आरंभ हो जाती थी। लम्बी पैदल यात्रा के कारण गुरुद्वारा श्री हेमकुंट साहिब का सफ़र भी डेढ़-दो महीने में तय होता था। फिर धीरे-धीरे सड़क आगे बढ़ती गई और सड़क का सफ़र आसान होता गया। १९५० ई. के दौरान सड़क चमोली तक जाती थी लेकिन १९५५ ई. तक जब जोशीमठ

* *सिक्ख विश्वकोष विभाग, पंजाबी यूनिवर्सिटी, पटियाला–१४७००२, फोन : ९८७२०-७४३२२*

तक सड़क बन गई तो यह एक प्रमुख ठिकाने की वजह से विकसित होने लगा। इसका दूसरा बड़ा कारण यह था कि इस समय तक श्री गोबिंद घाट पूरी तरह से आबाद नहीं हुआ था और जोशीमठ से आगे जाने वालों के लिए यही एक नगर था जहाँ से ज़रूरत की प्रत्येक वस्तु साथ ले जानी पड़ती थी। बद्रीनाथ जाने वाले श्रद्धालुओं की संख्या अधिक थी, जिस कारण जोशीमठ एक महत्वपूर्ण पड़ाव के तौर पर विकसित होने लगा था। यहाँ दिनो-दिन बाज़ार बड़ा होता जा रहा था जो कि इस नगर की चहल-पहल में विस्तार कर रहा था।

गुरुद्वारा श्री हेमकुंट साहिब जाने वाले श्रद्धालु बस आदि के माध्यम से इस नगर में आ जाते थे और ज़रूरी वस्तुएँ खरीद कर आगे जाते थे, क्योंकि इससे आगे कुछ भी मिलना संभव नहीं था और यदि कुछ मिलता भी था तो उसकी कीमत बहुत ज़्यादा होती थी। यात्रा के लिए आने वाले जत्थे ऋषिकेश से ही आवश्यक सामान साथ लेकर आते थे, ताकि रास्ते में से कम से कम सामान खरीदने की ज़रूरत पड़े। गुरुद्वारा साहिबान में भी सीमित साधन, धनराशि और निवास के प्रबंध थे, इसलिए यात्री जत्थों से भी यह आग्रह किया जाता था कि एक जत्थे में श्रद्धालुओं की संख्या २५-३० से ज्यादा न हो और यह प्रबंध ऋषिकेश में ही कर लिए जाएँ, ताकि अधिक संख्या में गुरुद्वारा श्री हेमकुंट साहिब के दर्शनार्थ जाने के लिए आने वाले बड़े जत्थों को छोटे-छोटे जत्थों के रूप में आगे भेजा जाये और यह यात्रा निर्विघ्न व निरंतर चलती रहे।

जोशीमठ तक सड़क बन जाने के कारण सिक्ख श्रद्धालुओं को साथ लेकर आने वाले जत्थेदार यह सोचने लगे थे कि इस नगर में भी एक ऐसे गुरुधाम की ज़रूरत है जहाँ श्रद्धालुओं के लिए लंगर और निवास की सुविधा का प्रबंध हो सके। इस कार्य के लिए यात्री जत्थे लेकर आने वाले जत्था-प्रमुखों ने यत्न करना आरंभ कर दिया था। 'ख़ालसा समाचार' की खबरें बताती हैं कि १६ सितम्बर, १९५९ ई. को जत्थेदार स. शमशेर सिंघ कानपुर ने बाबा ठंडी सिंघ तथा बाबा बलवंत सिंघ के साथ जोशीमठ में गुरुद्वारा स्थापित करने पर विचार किया और सर्वसम्मति के साथ इस अहमस्थान पर गुरुद्वारा स्थापित करने का प्रस्ताव पारित कर संगत को यह ख़ुशी भरी ख़बर सुनाई गई, जिस पर गुरुद्वारा श्री हेमकुंट साहिब जत्थे के रूप में गए यात्रियों ने धनराशि की अरदास करवाई। ३१ सज्जनों द्वारा करवाई अरदास से ८,४४५ रुपए इकठ्ठा हुए, जिसमें से ४,००० रुपए की १७०० गज़ ज़मीन खरीद कर रजिस्टरी करवा ली गई।

ज़मीन की रजिस्टरी होने के पश्चात् सबको यह आशा बंध गई थी कि अगले वर्ष तक इस

स्थान पर यात्रियों के निवास और लंगर का सरल प्रबंध हो सकेगा। इस समय तक कानपुर तथा श्री अमृतसर साहिब से ही यात्रा के लिए प्रमुख जत्थे आते थे और चीफ़ ख़ालसा दीवान एवं गुरुद्वारा श्री हेमकुंट साहिब ट्रस्ट इस कार्य के लिए यत्नशील थे। प्रबंधकों के लिए इस नगर में गुरुद्वारा साहिब की स्थापना एक बड़ा कार्य था, क्योंकि इसके निर्माण-कार्य को केवल श्रद्धालुओं के लिए ही सुविधाएं प्रदान करने का स्थान ही नहीं समझा जा रहा था, बल्कि इस गुरुधाम से श्री हेमकुंट साहिब के अगले पड़ाव के लिए सुविधाएं प्रदान करने हेतु एक केंद्र का काम भी लिया जाना था।

१९६२ ई. में इस नगर में एक सुंदर गुरुधाम का निर्माण कर उसका नाम 'गुरुद्वारा दुष्ट-दमन साहिब' रखा गया। बाबा ठंडी सिंघ ने संगत के सहयोग द्वारा इस गुरुधाम के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। इस गुरुधाम के निर्माण द्वारा गुरुद्वारा श्री हेमकुंट साहिब के दर्शनार्थ जाने वाली संगत के लिए लंगर और रिहायश का सुखद प्रबंध संभव हो सका था। इस वर्ष जब यात्रा संपूर्ण हुई तो इस गुरुद्वारा साहिब का प्रबंध नेशनल डिफेंस की योजना के अधीन सरकार ने अपने हाथ में ले लिया था। उससे यह अधिकार वापस लेने के लिए गुरुद्वारा श्री हेमकुंट साहिब की प्रबंधकीय समिति ने यत्न आरंभ कर दिए थे। १९६३ ई. में हुई एक मीटिंग में समिति ने सरकार से गुरुद्वारा साहिब वापस लेने पर विचार करते हुए एक प्रस्ताव पारित किया कि "जोशीमठ में गुरुद्वारे की नयी इमारत, जो नेशनल डिफेंस के लिए सरकार ने ली है, के सम्बंध में विचार हुई और प्रवान हुआ कि स. जुगिंदर सिंघ (मान), एसडीएम महोदय जोशीमठ को पत्र लिखें कि इस गुरुद्वारे का हाल श्री गुरु ग्रंथ साहिब की स्थापना के लिए चाहिए, इसलिए १.४.६३ तक अपना योग्य प्रबंध कर लें। जब तक उन्होंने इस इमारत को इस्तेमाल किया है, सरकार से उसका कोई किराया न लिया जाये।" उस समय से इस गुरुधाम का प्रबंध गुरुद्वारा श्री हेमकुंट साहिब की प्रबंधक समिति के अधीन है। मौजूदा समय में इस नगर के मुख्य बाज़ार में श्रद्धालुओं के लिए एक सुंदर गुरुधाम विद्यमान है, जहाँ रिहायश और लंगर की सभी आधुनिक सुविधाएं उपलब्ध हैं। चाहे कि गुरुद्वारा श्री हेमकुंट साहिब की यात्रा करने वाले श्रद्धालुओं के लिए गुरुद्वारा गोबिंद घाट एक प्रमुख केंद्र के रूप में विकसित हो गया है, परन्तु फिर भी इस नगर में बड़ी संख्या में श्रद्धालु दर्शन करने के लिए आते हैं।

हउमै दीरघ रोगु है दारू भी इसु माहि।।

–डॉ. श्याम सुंदर दीप्ति*

गुरबाणी के शब्दों की व्याख्या करें तो गुरु साहिबान ने अभिमान (अहं, घमंड) को गंभीर रोग बताया है। हमारे भारतीय सभ्याचार में दार्शनिकों और विद्वानों द्वारा भी मानव के अंदर पाँच विकार बताए गए हैं, जैसे कि काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार। उन्होंने भी इन पाँच विकारों में से अहंकार (अभिमान) को सबसे बड़ा दर्जा दिया है। आधुनिक युग में, विज्ञान की तरक्की के साथ-साथ जब बहुत ज़्यादा ज्ञान इकट्ठा किया गया तो इसमें मानव-स्वास्थ्य के प्रति भी विस्तार सहित बात हुई है। द्वितीय विश्व युद्ध के तबाहकुन परिणाम के बाद, विश्वस्तरीय संस्थाओं का गठन हुआ और मानवीय तबाही के मद्देनज़र, मानवीय विकास को प्राथमिकता दी गई।

मानवीय विकास के अंतर्गत स्वास्थ्य और शिक्षा को प्राथमिकता दी गई। स्वास्थ्य संस्था का जिम्मा 'विश्व स्वास्थ्य संस्था' का गठन कर, उसके जिम्मे दिया गया। स्वास्थ्य को वैज्ञानिक नज़रिए से समझते हुए, संस्था ने स्वास्थ्य की व्याख्या की कि स्वस्थ होना केवल किसी तरह की बीमारी से रहित होना नहीं है, बल्कि मानव का शारीरिक, मानसिक और सामाजिक तौर पर पूरी तरह से स्वस्थ होना भी है।

अगर हम अपनी रोज़मर्रा की निजी ज़िंदगी में झांक कर देखें तो हम लोग किसी शारीरिक समस्या को ही बीमारी समझते हैं। अब हम लोग कुछ समय से मानसिक उलझनों और मानसिक तकलीफ़ के प्रति सजग हुए हैं। यदि सामाजिक स्वास्थ्य की बात करनी हो तो उसके बारे में हमने अभी सोचना भी शुरू नहीं किया।

स्वास्थ्य के ये तीनों पक्ष कोई अलग-अलग बाँटे हुए हिस्से नहीं हैं, बल्कि एक- दूसरे को प्रभावित भी करते हैं। हम शारीरिक स्वास्थ्य के प्रति सभी परिचित हैं। मन की अवस्था, जैसे— उदासी और बेचैनी के प्रति हम सचेत होने लगे हैं। तीसरा पक्ष है— सामाजिक, जो कि हमारे आपसी सामाजिक रिश्तों के साथ जुड़ा हुआ है। हम देख रहे हैं कि दिन-ब-दिन यह पक्ष समाज में से कम हो रहा है या बहुत निचले स्तर पर पहुँच गया है। "हउमै दीरघ रोगु" को अगर समझना हो तो यह सामाजिक और मानसिक दोनों पक्षों के आपसी मेल में से पैदा होता है। अभिमान को साधारण शब्दों में समझें तो इसके अर्थ हैं— "केवल मैं ही खास हूं। मैं किसी अन्य को कुछ नहीं समझता।"

* ९७, गुरु नानक एवेन्यू, मजीठा रोड, श्री अमृतसर साहिब–१४३००१, फोन : ९८१५८-०८५०६

हम इस स्थिति को जब सामाजिक घटनाक्रम में घटित होता हुआ देखते हैं तो हमारे रिश्तों में दरार आनी शुरू हो जाती है और आपस में दूरी बढ़ जाती है। अकेलेपन की हालत में बेचैनी का सामना करना पड़ता है। अकेलापन धीरे-धीरे घबराहट और अंत में उदासी की तरफ ले जाता है। इस उदासी की हालत को हम लोग आजकल अफने आस-पास घटित होता तथा बढ़ता हुआ देख रहे हैं। अब तक हमने जाना है कि इसकी जड़ में बड़ा हाथ मानव के अभिमान का है।

गुरबाणी की उपरोक्त पंक्ति का दूसरा हिस्सा है— "दारू भी इसु माहि।।" इसका अर्थ है कि इस मानसिक विकार का इलाज भी इसके अंदर ही छिपा हुआ है, मतलब, हमारे अपने अंदर ही। यह मात्र 'मैं' को ख़त्म करना ही नहीं है, जिस प्रकार कि प्रचार किया जाता है, बल्कि 'मैं' को अपने अनुकूल बनाना होता है। 'अभिमान' को 'स्वाभिमान' के रूप में लिया जाता है, जब कोई अपने आप पर अपनी काबलियत के आधार पर फख्र, मान महसूस करता है और इस फख्र, मान का मतलब है कि उसे अपने कर्म पर आधारित पहचान मिले। ऐसे में अकड़बाज होने या अपनी पहचान को लेकर हठ करने की ज़रूरत नहीं है।

गुरबाणी में एक अन्य वाक्य है— "मिठतु नीवी नानका", जिससे मानव अपने सामाजिक रुतबे के साथ, अपनी बोल-चाल में मीठा बोले और नम्रतापूर्वक बात करे। जब बेचैनी और परेशानी की बात होती है तो इसके साथ जुड़ी दिल की अलामतों को लेकर ब्लड प्रेशर (लहू का दबाव) जैसी बीमारियाँ और दिल के दौरे की घटनाएँ रोज़ाना सुनने को मिलती हैं। बेचैनी और परेशानी से छुटकारा पाने के लिए अभिमान के सम्बंध में गुरबाणी में ही शब्द हैं— "हउमै बुझै ता दरु सूझै॥ गिआन विहूणा कथि कथि लूझै॥" अभिमान या अहंकार को दीर्घ रोग इसी लिए बताया गया है कि अभिमान में इंसान स्वास्थ्य की तीनों अवस्थाओं से पीड़ित होता है। अभिमान मानवीय रिश्तों में खलल तो डालता ही है, बल्कि शारीरिक तौर पर भी नकारा कर देता है और मन भी उदास-उदास रहता है।

अभिमान का एक इलाज 'ज्ञान' है, जिसके द्वारा अभिमान का अंधकार दूर किया जा सकता है। जब मानव अभिमानग्रस्त होता है तो उसे कुछ नहीं सूझता। उसको अपने हो रहे नुकसान का भी बोध नहीं होता। हमारा समाज आपस में मिल कर एक-दूसरे की मदद कर, एक-दूसरे को सहारा देकर ही आगे बढ़ सकता है। समाज का विकास मानव के इसी रवैये ने किया है। समूचे समाज को गुरबाणी की शिक्षा पर चलने की ज़रूरत है, ताकि स्वस्थ और आरोग्य समाज का निर्माण किया जा सके।

सिक्ख धर्म में दसतार की महानता

*–बीबी प्रकाश कौर**

संसार में सिक्ख धर्म एक विलक्षण और अलग पहचान रखने वाला धर्म है। सिक्ख के पहनावे में दसतार का विशेष स्थान है। दसतार सिक्खी की शान और सिक्ख सतिगुरु साहिबान द्वारा प्रदत्त वो महान रहमत है, जिससे सिक्ख के न्यारेपन के अस्तित्व का प्रकटीकरण होता है। इसे धारण कर प्रत्येक सिक्ख का सिर फ़ख़्र के साथ ऊँचा हो जाता है। यह सिक्ख के सिर का ताज है। इस दसतार रूपी ताज को बरकरार रखने के लिए अनेक कुर्बानियां हुई हैं। दशम गुरु साहिब ने दसतार की पूरी कीमत अपने चार साहिबज़ादे, माता-पिता तथा असंख्य सिंघों और अपने आपको कुर्बान कर चुकाई है, जिस कारण आज पूरे विश्व में एक साबित-सूरत दसतारधारी को 'सरदार जी' कह कर बुलाया जाता है। दसतार सिक्खों के आत्मसम्मान और इज्जत की प्रतीक है।

दसतार फ़ारसी भाषा का शब्द है, जिसका अर्थ है— हाथों द्वारा संवार कर बाँधा हुआ वस्त्र। दसतार कई नामों से प्रचलित है। दसतार को अंग्रेज़ी भाषा में टर्बन, फ्रेंच में टलबैंड, रोमानी में टुलीपन, लातीनी भाषा में माईटर और तुर्की में सारीक कहा जाता है। और भी विभिन्न धर्मों तथा विभिन्न भाषाओं में दसतार के नाम हैं, जैसे— साफ़ा, चीरा, परना, शमला, तारबुश तथा संस्कृत में उशणीश आदि।

पंजाबी भाषा में दसतार को 'पग्ग' भी कहा जाता है। 'पग्ग' का अर्थ है— बुद्धिमत्ता। भावार्थ— दसतार सूझ-बूझ और बुद्धिमत्ता का प्रतीक है। दसतार पंजाब के अलावा हरियाणा, बंगाल, बिहार, गुजरात, महाराष्ट्र, राजस्थान आदि राज्यों में अपने-अपने सभ्याचार के अनुसार बाँधी जाती है। दसतार को सजाने (बाँधने) के रूप भी अलग-अलग प्रचलित रहे हैं।

आदि काल से ही मानव अपने सिर पर दसतार सजाता रहा है। मानव-जन्म सब जन्मों से सर्वोपरि माना गया है। अन्य योनियों का सरदार मानुष है— "अवर जोनि तेरी पनिहारी।। इसु धरती महि तेरी सिकदारी॥" संसार के लगभग सभी पीर-पैग़म्बर, ऋषि-मुनि, गुरु, भक्त केशाधारी हुए हैं। केशों की संभाल के लिए जिस वस्त्र का प्रयोग किया जाता है, उसे पग्ग, पगड़ी व दसतार का नाम दिया गया है। एशिया के कई मुल्कों में तो आज भी दसतार

*८६, टैगोर नगर, टी. वी. सेंटर के पीछे, जलंधर–१४४००२, फोन : ९८८८१- ८६०८६

बांधने का रिवाज़ है। अरब, ईरान, इराक, अफगानिस्तान आदि मुल्क के निवासी दसतार बाँधते हैं।

ईरानी और अरबी लिबास में दसतार को विशेष स्थान प्राप्त है। अरब देशों में जिस आदमी ने अरबी तालीम की योग्यता पूरी कर ली हो उसे सम्मानपूर्वक दसतार बाँधी जाती है। सामाजिक और सांस्कृतिक तौर पर दसतार इज्जत, अदब और सलीके का प्रतीक रही है। पुरातन समय में दसतार को बहुत सम्मान हासिल था कि कोई भी धार्मिक या सामाजिक कार्य नंगे सिर नहीं किया जाता था। राजा भी अपने उत्तराधिकारी को अपनी दसतार सौंप कर उसे अपना वारिस या अगला बादशाह घोषित करता था। इस रीति को 'ताजपोशी' कहा जाता था। प्रत्येक समाज में जन्म, विवाह और मृतक संस्कार महत्वपूर्ण समझे जाते हैं। इन संस्कारों को निभाते समय भी दसतार की अहम भूमिका रही है। आदमी की पहचान उसकी भाषा, चाल एवं लिबास से होती है।

पंजाबी सभ्याचार में दसतार इज्जत, आबरू और आत्मसम्मान का प्रतीक मानी गई है। श्री गुरु ग्रंथ साहिब में दसतार के लिए दसतार, पग्ग, पाग, पगड़ी और दुमालड़ा शब्दों का प्रयोग किया गया है। भक्त शेख फ़रीद जी के अनुसार :

फरीदा मै भोलावा पग दा मतु मैली होइ जाइ॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना १३७९)

भक्त नामदेव जी ने अकाल पुरख का चित्रण करते हुए उच्चारण किया है :

खूबु तेरी पगरी मीठे तेरे बोल॥
द्वारिका नगरी काहे के मगोल॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ७२७)

सिक्ख धर्म में दसतार को सर्वोच्चता प्राप्त रही है। दसतार की दास्तान सिक्ख धर्म के आगमन के साथ ही शुरू होती है। श्री गुरु नानक साहिब ने जब कराहती हुई जनता को देखा तो उन्होंने 'धुर की बाणी' का उपदेश देकर ग़ुलामी की जंजीरों में जकड़े भारतीय लोगों के मृत स्वाभिमान को जगाते हुए कहा कि :

जे जीवै पति लथी जाइ॥
सभु हरामु जेता किछु खाइ।।

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना १४२)

'पुरातन जन्म-साखी' के अनुसार श्री गुरु नानक साहिब जब पूरब दिशा की उदासी पर गए तो उन्होंने पटना शहर के निवासी सालस राय को दसतार की बख्शिश की थी। श्री गुरु अंगद देव जी और श्री गुरु अमरदास जी भी अपने प्रचारकों को 'दसतार' प्रदान किया करते थे। श्री गुरु रामदास जी की हज़ूरी में मसंद आया करते थे तो उन्हें दसतार देकर सम्मानित किया जाता था। श्री गुरु रामदास जी के ज्योति-जोत समाने के बाद बड़े पुत्र प्रिथीचंद को पारिवारिक ज़िम्मेदारी की दसतार और श्री गुरु अरजन देव जी को गुरगद्दी की

दसतार सजाई गई। (भाई केसर सिंघ छिब्बर कृत बंसावलीनामा)

श्री गुरु अरजन देव जी गुरबाणी में 'दुमाले' की महत्ता दरसाते हुए फरमान करते हैं कि जब अखाड़े में कोई पहलवान जीत प्राप्त करता था तो उस विजेता पहलवान को 'दुमाले' द्वारा सम्मानित किया जाता था। गुरु साहिब अपने आप को वाहिगुरु का विजेता पहलवान घोषित करते हुए फरमान करते हैं :

हउ गोसाई दा पहिलवानड़ा॥
मै गुर मिलि उच दुमालड़ा॥
सभ होई छिंझ इकठीआ दयु बैठा वेखै आपि जीउ॥ *(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ७४)*

श्री गुरु अरजन देव जी ने दसतार के साथ-साथ साबित सूरत रहने का आदर्श भी रखा है। उन्होंने मानुष को दसतार सहित साबित सूरत रहने का उपदेश किया है। इस प्रकार दसतार बांधने को सम्मान का चिह्न माना गया है :

नापाक पाकु करि हदूरि हदीसा साबत सूरति दसतार सिरा॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना १०८४)

सभी गुरु साहिबान ने अपने सीस पर दसतार सजाई और मनुष्य को किये उपदेश को व्यावहारिक रूप प्रदान किया। श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब की सुंदर दसतार के सामने जहाँगीर बादशाह का ताज भी बौना नज़र आता था। इसका हवाला देते हुए गुरु जी के हज़ूरी ढाडी भाई अब्दुल्ला जी और भाई नत्था जी अपनी वार में गुरु जी की दसतार की तारीफ़ करते हैं :

कटक सिपाही नील नल,
मार दुषटां करे तगीर जी।
पग्ग तेरी, की जहाँगीर दी ?

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ख़ुद सुंदर दसतार सजाया करते थे और पाउंटा साहिब में दसतार प्रतियोगिता का आयोजन करवाया करते थे। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने १६९९ ई. की बैसाखी को खालसा पंथ की सृजना कर ख़ालसे की रहित मर्यादा बतायी, जिसमें दसतार सिक्ख रहित का अटूट अंग बताई गई, जो विभिन्न पुरातन सिक्ख ग्रंथों और 'रहितनामों' में दर्ज है। भाई नंद लाल जी अपनी रचना 'तनखाहनामा' में सिक्ख को दसतार सजाने के प्रति हिदायत करते हैं :

कंघा दोनउ वकत कर पाग चुनहि कर बांधई।

भाई देसा सिंघ ने 'रहितनामे' में लिखा है कि गुरसिक्ख प्रात: काल उठ कर स्नान करे, कंघा कर, सिर के मध्य जूड़ा कर छोटी दसतार (केसकी) सजाए। फिर बड़ी दसतार चुन कर बांधे!

— प्रात इशनान जतनसो साधे।
कंघा करद दसतारहि बांधे।

भाई दया सिंघ जी के 'रहितनामे' में दर्ज है :

जूड़ा सीस के मद्ध भाग मै राखे, और पाग बड़ी

बांधे।

भाई प्रहिलाद सिंघ ने 'रहितनामे' में लिखा है :

पाग उतारि प्रसादि जो खावे, सो सिक्ख कुंभी सुराही नरक सिधावे।

सामाजिक तौर पर भी दसतार सिक्खों की पहचान और सिक्खी शान का चिह्न है। मुगलों के शासन-काल में सिक्खों पर कई तरह के अत्याचार किये जाते थे, परन्तु वे बड़ी शान के साथ दसतार बाँधते रहे। अंग्रेज़ सरकार को भी सिक्खों की दसतार के प्रति श्रद्धा-भावना रखना पड़ी थी। आज़ादी की जंग में दसतार को भारतीय लोगों की राजनैतिक स्वतंत्रता, सामाजिक प्रतिष्ठा और आर्थिक ख़ुशहाली का प्रतीक समझा गया था।

सिक्ख अपनी दसतार का ही सम्मान नहीं करते, बल्कि प्रत्येक की दसतार का भी सम्मान करते हैं। युद्ध के मैदान में भी सिक्ख दुश्मन की दसतार नहीं उतारते।

दसतार के कारण वर्तमान समय में भी सिक्खों को कई प्रकार की मुश्किलों का सामना करना पड़ रहा है। नवंबर १९८४ के सिक्ख कत्ल-ए-आम में भी दसतारधारियों को निशाना बना कर चुन- चुन कर मारा गया था। देश के अलावा विदेशों में भी दसतार की शान बरकरार रखने के लिए सिक्खों को समय-समय पर संघर्ष करना पड़ा है। जानबूझ कर सिक्खों की अलग पहचान 'दसतार' को निशाना बनाया जाता है। हवाई अड्डों पर भी सिक्खों की दसतार की तलाशी ली जाती है।

संसार में पश्चिमी सभ्याचार का बोलबाला होने के कारण दसतार या दसतार सभ्याचार को भारी ठेस पहुँची है। आज के सिक्ख नौजवान बाहर जाने की होड़ में केसों को तिलांजलि दे रहे हैं और दसतार सजाने से किनारा कर रहे हैं। वे नशों की दलदल में गलतान हो रहे हैं। सिक्ख विरोधी मानसिकता के बल पकड़ने पर दसतार का सम्मान बरकरार रखना सिक्ख पंथ के लिए एक बड़ी चुनौती बनता जा रहा है। वर्तमान में सिक्ख के वजूद को बचाने के लिए इस सम्बंध में बहुत प्रयास किए जा रहे हैं। बहुत-सी सिक्ख संस्थाओं, सभा-सोसायटियों, सिक्ख बुद्धिजीवियों द्वारा दसतार की महत्ता और शान को बरकरार रखने के लिए दसतारबंदी प्रतियोगिताएं आयोजित करवाई जा रही हैं। दसतार सजाने के प्रशिक्षण केंद्र खोले जा रहे हैं। शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, श्री अमृतसर साहिब भी बड़े स्तर पर दसतार मुकाबले करवा रही है। बच्चों में काफ़ी उत्साह पाया जा रहा है। यह अति सराहनीय कदम है।

मार्च २०२५ का शेष भाग

क्या आरएसएस ने मुसलिम लीग के दंगाकारियों से श्री हरिमंदर साहिब श्री दरबार साहिब की रक्षा की थी ?

*–स. जसकरन सिंघ **

३. डॉक्टर गोकुल चंद नारंग पश्चिमी पंजाब के हिंदुओं एवं सिक्खों के कत्ल-ए-आम का वर्णन तो खुल कर करते हैं और मुसलमानों के इस तरफ के कत्ल-ए-आम को दो संप्रदायों के मध्य झगड़ा बता कर समेट देते हैं। इतिहासकार को ऐसा पक्षपात नहीं करना चाहिए। यह ठीक है कि कत्ल-ए-आम की प्रारंभता पश्चिमी पंजाब में मुसलमान दंगाकारियों ने ही की थी, परन्तु बाद में पूरबी पंजाब और दिल्ली व पश्चिमी उत्तर प्रदेश में मुसलमानों का कत्ल-ए-आम भी बहुत हुआ था। सही अंदाज़ा लगा पाना तो कठिन है, परन्तु मारे गए मुसलमानों की संख्या मारे गए सिक्खों एवं हिंदुओं की संख्या की अपेक्षा अगर तीन गुना नहीं तो दोगुना अवश्य थी।

ज्ञानी प्रताप सिंघ, जत्थेदार, तख़्त श्री केसगढ़ साहिब ने अपनी पुस्तक 'पाकिस्तानी घल्लूघारा' (पृष्ठ १३८ से १४२) में ४ से ७ मार्च के दरमियान श्री अमृतसर साहिब में घटित घटनाओं और तलख़ महौल के बारे में बहुत ही ज़रूरी जानकारी दर्ज की है। वे लिखते हैं कि लाहौर में रोष प्रदर्शन कर रहे हिंदू व सिक्ख विद्यार्थियों पर गोली चलने के विरोध में ४ मार्च शाम को गुरुद्वारा मंजी साहिब में बड़ा भारी दीवान सजा, जिसमें हज़ारों सिक्ख व हिंदू शामिल हुए। जत्थेदार ऊधम सिंघ नागोके (विधायक), जो कि उस समय शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के अध्यक्ष थे, ने अपील की कि रोष के तौर पर ५ मार्च को शहर में शांतमयी रहते हुए मुकम्मल हड़ताल की जाये। इसके अनुसार ५ मार्च दिन बुधवार को हड़ताल हुई, गुरुद्वारा मंजी साहिब में फिर दीवान आयोजित करने का एलान किया गया। भाई मंगल सिंघ सेवादार श्री दरबार साहिब कमेटी, एक तांगे में बैठकर इस दीवान का ढिंढोरा पीट रहा था, तभी चौंक मोनी में मुसलमान ने ईंटें मार कर उनका कत्ल कर दिया। इससे पूरे श्री अमृतसर साहिब में बेचैनी फैल गई और गड़बड़ शुरू हो गई। होला-महल्ला होने के कारण बहुत सारी संगत और सिक्ख नेता श्री अनंदपुर साहिब गए थे। श्री अमृतसर साहिब में सरदार सोहण सिंघ जलालउसमां, सरदार ईशर सिंघ मझैल मौजूद थे और जत्थेदार ऊधम सिंघ नागोके खडूर साहिब से श्री अमृतसर साहिब आए। शहर में मुसलिम लीग वालों के साथ हिंदुओं और सिक्खों की कई झड़पें हुईं, जिसमें दोनों तरफ से कई लोग मारे गए। हिंदू व सिक्ख मुसलिम मुहल्लों में से निकल कर श्री दरबार साहिब और श्री गुरु रामदास जी निवास में इकठ्ठा हो रहे थे, क्योंकि शहर में उपद्रव फैल चुका था। गुरु की नगरी श्री अमृतसर साहिब, श्री दरबार साहिब और आस-

**लेखक, सूचना एवं तकनीकी विभाग, शि. गु. प्र. कमेटी, श्री अमृतसर साहिब–१४३००१, फोन : ९८७६६-८९९३०*

पास की सुरक्षा के लिए जत्थेदार सोहण सिंघ जलालउसमां ने बहुत-सी लारियाँ गाँवों में से सिंघों को लाने के लिए तरनतारन तथा थाना ब्यास की तरफ भेजीं। सिंघों को संदेश यह भेजा गया कि "गुरु की नगरी घोर संकट में है। श्री दरबार साहिब की सेवा के लिए जल्दी पहुँचो !" अतएव ६ मार्च शाम को चार-पाँच हजार सिंघ श्री अमृतसर साहिब पहुंच गये। ७ मार्च को प्रात: काल गाँवों में से आए सिंघों ने शहर के कई हिस्सों में हमलावरों को रोका और उनके दाँत खट्टे किये। ज्ञानी प्रताप सिंघ ने उस समय का हाल बाखूबी बयान किया है, परन्तु कहीं भी यह ज़िक्र नहीं किया कि मुसलिम लीग के लोगों ने श्री दरबार साहिब पर हमला किया या वे श्री दरबार साहिब के निकट भी पहुँचे हों। यदि ऐसी कोई घटना घटी होती तो उन्होंने उसका वर्णन अवश्य करना था। यह एक अहम घटना होती जिसे सिक्खों ने इतिहास का भाग अवश्य बनाना था।

ज्ञानी सोहण सिंघ सीतल अपनी पुस्तक 'पंजाब दा उजाड़ा' (पृष्ठ ३८ से ४४) में श्री अमृतसर साहिब से सम्बन्धित ५ मार्च की घटनाओं के सम्बंध में लिखते हैं कि इस दिन सिक्खों व हिंदुओं का नुकसान तो ज्यादा हुआ क्योंकि उन पर अचानक हमला हुआ था, फिर भी उन्होंने लीगियों को श्री हरिमंदर साहिब के निकट नहीं पहुँचने दिया। उन्होंने ५ मार्च को श्री अमृतसर साहिब में ७० के लगभग मौतें हुई लिखी हैं। उनके अनुसार अगले दिन ६ मार्च को अपरान्ह दो बजे तक श्री अमृतसर साहिब में मुसलिम लीग के लोग आगे बढ़ते रहे, लेकिन सायं होने से पूर्व गाँवों से बहुत-से सिंघ "मरउ त हरि कै दुआर" की भावना के तहत श्री अमृतसर साहिब पहुँच चुके थे। जत्थेदार ऊधम सिंघ नागोके, मास्टर तारा सिंघ, स. सोहण सिंघ जलालउसमां स. ईशर सिंघ मझैल तथा अन्य सिक्ख नेताओं ने आगे बढ़ कर मुसलिम लीगियों मुस्लिम लीगियें का मुकाबला किया और किसी को भी श्री हरिमंदर साहिब के निकट नहीं पहुँचने दिया। सबसे बड़ी टक्कर फव्वारा चौक में घटी। लीगियों पर तीन दिशाओं से हमला हुआ था। एक दिशा से जत्थेदार ऊधम सिंघ नागोके गोलियाँ चला रहे थे, दूसरी दिशा से कुछ अन्य सिक्ख नौजवानों ने हमला किया और तीसरी दिशा के बिजली पहलवान हिंदू नौजवानों को साथ लेकर रास्ता रोके खड़ा था। जितना प्रेम और इत्तफ़ाक हिंदू व सिक्खों में उस समय पर था, गुरु कृपा करे, सदा बना रहे ! चौथी दिशा खाली थी, जहाँ मुसलिम पुलिस पर लीगियों की मदद के लिए खड़ी थी। यहाँ पर लीग के लोग सिक्खों तथा हिंदुओं के जोश के आगे टिक न सके और भाग खड़े हुए। अगले दिन ७ मार्च को दो बजे २४ घंटे के लिए कर्फ्यू लगा दिया गया और बाहर नज़र आने वाले को गोली देने का हुक्म था। ज्ञानी सोहण सिंघ सीतल के अनुसार इसके पश्चात् १० दिन के लिए सायं आठ बजे से लेकर प्रात: सात बजे तक कर्फ्यू लगा दिया गया।

इनकी रचना से सिद्ध होता है कि ९ मार्च को श्री दरबार साहिब पर हमले की कोई घटना नहीं घटी, क्योंकि उस समय शहर में कर्फ्यू लगे को दो

दिन हो चुके थे और ६ मार्च वाले दिन श्री दरबार साहिब में बड़ी संख्या में सिक्ख मौजूद थे।

शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी द्वारा प्रकाशित स. गुरबचन सिंघ तालिब की पुस्तक 'मुसलिम लीग दे हमले दी विथिआ' (पृष्ठ ८५ से १०२) में लेखक ने बंटवारे के समय श्री अमृतसर साहिब में घटी घटनाओं के तथ्य बहुत ही विस्तार में दर्ज किये हैं। मार्च, १९४७ ई. में श्री अमृतसर साहिब में हिंदुओं और सिक्खों के साथ मुसलिम लीगियों की जो झड़पें हुईं उनके बारे में तालिब साहिब लिखते हैं कि यहाँ पर लीग ने अपनी पूरी ताकत झोंक कर मार्च से अगस्त तक एक - पक्षीय लड़ाई की, जिसमें मुसलमानों के पास भारी ताकत थी और सिक्खों ने सिर धड़ की बाज़ी लगाई। उन्होंने श्री अमृतसर साहिब को एक तरह से 'स्टालिन गराड' कहा। सिक्खों ने इस लड़ाई को अपनों सिर पर झेला और हमले को ऐसे सहन किया जैसे लंदन ने १९४०- ४१ ई. में तथा स्टालिन गराड ने १९४४ ई. तक सहन किया था। सारी पुस्तक में कहीं भी ज़िक्र नहीं आया कि लीग के लोग श्री दरबार साहिब के निकट पहुँचे या उन्होंने हमला किया या आरएसएस द्वारा यहाँ पर सुरक्षा के लिए अपने स्वयंसेवक नियुक्त किये गए हों। पाँच मार्च को रात के समय मुसलमानों ने कृष्णा मार्केट (श्री दरबार साहिब से ५०० मीटर की दूरी पर स्थित) और श्री दरबार साहिब पर हमला करने की योजना बनाई, मल्लिका की मूर्ति और चौंक फव्वारा की सड़क पर आमने-सामने लड़ाई हुई, जिसमें सिक्खों और मार्केट के दुकानदार हिंदुओं की हिम्मत और दम ने मुसलमान हमलावरों को भगा दिया। मार्केट तथा श्री दरबार साहिब को जो ख़तरा था, वो टल गया और लीगी लोग दोबारा इस तरफ़ नहीं आए। इनकी पुस्तक के अनुसार ५ मार्च को श्री दरबार साहिब में कमेटी के दो दर्जन के करीब सेवादार थे, जिनके पास कृपाणें थीं और लगभग दो हज़ार निहत्थे यात्री भी मौजूद थे। इससे सिद्ध होता है कि यदि उस रात या अगले दिन श्री दरबार साहिब पर हमला होता तो यहाँ पर इतने सिक्ख मौजूद थे कि वे उनका मुकाबला कर सकते। आर एसएस पक्ष द्वारा सृजित किए जा रहे गलत वृत्तांत को सही कैसे माना जाये ? तालिब द्वारा दर्ज किये गए सरकारी आंकड़ों के अनुसार ५ मार्च से लेकर २२ मई, १९४७ ई. तक अकेले श्री अमृतसर साहिब में तकरीबन १७४ सिक्खों, ६९ हिंदुओं और ८५ मुसलमानों की मृत्यु हुई।

पद्म श्री प्रोफेसर रघुवेंद्र तंवर, जो कि वर्तमान समय में भारतीय इतिहास रिसर्च कौंसिल के चेयरमैन हैं, ने बँटवारे से सम्बन्धित अपनी बहुत ही महत्वपूर्ण पुस्तक 'रिपोर्टिंग द पार्टीशन ऑफ पंजाब : १९४७, प्रेस, पब्लिक एंड अदर ओपिनियन' (पृष्ठ १२२) पर लिखा है कि ६ मार्च को श्री अमृतसर साहिब के फ़साद में २७ मौतें हुईं तथा १०० से अधिक व्यक्ति ज़ख़्मी हुए और ७ मार्च को यहाँ फ़ौज तैनात हो गई थी। इन्होंने भी अपनी पुस्तक में कहीं ज़िक्र नहीं किया कि मुसलिम लीग लोगों के श्री दरबार साहिब पर कोई हमला किया हो या आरएसएस ने यहाँ की सुरक्षा

के लिए अपने स्वयंसेवकों की कोई नियुक्तियाँ की हों।

उस समय के अंग्रेज़ी अख़बार ' सिविल एंड मिलेट्री गज़ट' (सी. एम. जी.) में ८ मार्च, १९४७ ई. को प्रथम पृष्ठ पर श्री अमृतसर साहिब की घटनाओं के सम्बंध में ख़बर प्रकाशित हुई है, ७ मार्च को भेजी गई यह ख़बर बताती है कि शहर में भारी गड़बड़ होने के कारण मुसलिम मुहल्लों में से हिंदुओं और सिक्खों को बचा कर श्री दरबार साहिब या सिविल लाईन में लाया गया। अगले दिन ९ मार्च, १९४७ ई. को सी. एम. जी. के प्रथम पृष्ठ पर छपा है कि श्री अमृतसर साहिब में १००० अंग्रेज़ फ़ौजी और ६०० हथियारबंद पुलिस वाले शुक्रवार (७ मार्च) की दोपहर को पहुँच गए थे। इस समय के दौरान ६, ८, ९ और ११ मार्च को प्रकाशित सी. एम. जी. में श्री अमृतसर साहिब से सम्बन्धित रिपोर्टों में कहीं भी ज़िक्र नहीं मिलता कि मुसलिम लीग के लोगों ने श्री दरबार साहिब पर हमला किया हो या वे इस पवित्र स्थान के निकट भी पहुँचे हों या आरएसएस ने अपने स्वयंसेवक यहाँ नियुक्त किये हों, जबकि अख़बार ने श्री अमृतसर साहिब शहर में हुई गड़बड़ी के बाकी हाल और सरकारी पक्ष अच्छी तरह से दर्ज किये हैं। श्री अमृतसर साहिब के बारे में ११ मार्च को सी. एम. जी. में छपा है कि ८ मार्च तक ८८ मौतें हुईं और १४९ व्यक्ति घायल हुए और ९ मार्च की रात बिना किसी गड़बड़ी के बीती।

निष्कर्ष : सी. एम. जी. की रिपोर्ट से 'द प्रिंट' द्वारा प्रकाशित किये अरुण आनंद के लेख का पर्दाफाश होता है, जिसमें यह दावा किया गया है कि ९ मार्च को मुसलिम लीग के लोगों ने श्री दरबार साहिब पर तीन दिशओं से हमला किया, जबकि अख़बार स्पष्ट लिख रहा है कि यह रात बिना किसी गड़बड़ी के गुज़री। इस अख़बार में भी अरुण आनंद की तरफ से ६ मार्च से सम्बन्धित किये दावे को लेकर के सम्बंध में कोई ज़िक्र नहीं मिलता।

भारत के प्रसिद्ध राष्ट्रीय अख़बार 'द टाइम्स ऑफ इंडिया' (टीओआई) में ६ मार्च, १९४७ ई. को पहले और सातवें पृष्ठ पर रिपोर्ट छपी है कि श्री अमृतसर साहिब शहर में ५ मार्च को भारी गड़बड़ होने के कारण यहाँ अंग्रेज़ फ़ौज बुलाने के साथ-साथ जिला मैजिस्ट्रेट जे. डी. फ्रेजर ने १० दिन के लिए शाम ८ बजे से लेकर सुबह ७ बजे तक कर्फ्यू लगा दिया। शहर में यह गड़बड़ चौक मौनी में एक सिक्ख के कत्ल के बाद फैली। उपरांत यह गड़बड़ कटरा करम सिंघ, लोहगढ़ गेट, हाल बाज़ार आदि स्थानों पर भी फैल गई। ७ मार्च के टीओआई के अनुसार श्री अमृतसर साहिब में गड़बड़ ६ मार्च को दूसरे दिन भी जारी रही, जिस कारण हाल बाज़ार, कटरा जैमल सिंघ और निकटवर्ती क्षेत्रों में दुकानें जलाई गईं। इसी तरह ८ मार्च का टीओआई बताता है कि ६ मार्च को गड़बड़ न रुकने के कारण ७ मार्च बाद दोपहर २ बजे से २४ घंटे के लिए कर्फ्यू लगा दिया गया था, जिसके पश्चात् हालात कुछ काबू में आए। कर्फ्यू के समय लूटमार करने वाले या बाहर दिखने वाले को गोली मार दी जाती। ८ मार्च का टीओआई

लिखता है कि, "७ मार्च को श्री अमृतसर साहिब के हालात काफ़ी काबू में आ गए थे, हालाँकि शहर में कहीं-कहीं आगजनी होती रही। ७ मार्च को बाद दोपहर दो बजे तक श्री अमृतसर साहिब के १२ अलग-अलग गेट से अंग्रेज़ सिपाहियों की दो कंपनियाँ शहर में दाख़िल हो चुकी थीं। २४ घंटे के कर्फ्यू को ६८ घंटों के लिए बढ़ा दिया गया, जिसके पश्चात् चार घंटें की रियायत देने के आदेश थे। इसके बाद कर्फ्यू ५ दिन के लिए २० घंटे का कर दिया गया। कर्फ्यू के दौरान किसी भी तरह का हथियार लेकर जाने वाले या लूटमार में शामिल आपराधिक तत्वों को बिना चेतावनी के गोली मारने के आदेश थे। ७ मार्च को श्री अमृतसर साहिब शहर के ऊपर से एक जहाज़ के माध्यम से लोगों को कर्फ्यू के समय घर के अंदर रहने की चेतावनी देने वाले पर्चे फेंके गए। श्री हरिमंदर साहिब श्री दरबार साहिब की इस पवित्र नगरी के इतिहास में ऐसे सांप्रदायिक फ़साद में पिछले ४६ घंटों, अर्थात् बुधवार (५ मार्च) दोपहर से लेकर आज (७ मार्च) दोपहर २ बजे तक ४० के करीब मौतें और १२१ लोग घायल हुए हैं। श्री हरिमंदर साहिब श्री दरबार साहिब और कटरा आहलूवालिया में सिक्खों तथा हिंदुओं के लिए दो महत्वपूर्ण शरणार्थी कैंप बन गए हैं। . . . ५० हज़ार लोग श्री हरिमंदर साहिब श्री

दरबार साहिब में रह रहे हैं।

१० मार्च के टीओआई के प्रथम पृष्ठ पर प्रकाशित समाचार के अनुसार जब ९ मार्च को प्रात: काल १० बजे से २ बजे तक चार घंटे के लिए कर्फ्यू हटा तो एपीआई के पत्रकार ने शहर में दौरा किया और देखा कि कटरा जैमल सिंघ, बाज़ार पच्छम वाला, कूचा छज्जू मिस्त्र, चौक ढोलां, आदि स्थानों पर आगजनी की घटनाएँ घटित हुई थीं।

निष्कर्षत : टीओआई जैसे प्रमुख अख़बार में ६ से १० मार्च के दरमियान प्रकाशित रिपोर्टों में कहीं भी ज़िक्र नहीं आया कि ६ मार्च या ९ मार्च को श्री हरिमंदर साहिब श्री दरबार साहिब पर मुसलिम लीग के लोगों ने हमला किया हो या आरएसएस के कार्यकर्ता यहाँ सुरक्षा के लिए तैनात किये गए हों।

उस समय सिक्खों का अपना अख़बार 'खालसा समाचार' भी छपता था। हालाँकि जो खोज हम कर रहे हैं उस काल (मार्च १९४७) में अंग्रेज़ सरकार द्वारा 'खालसा समाचार' पर ३० दिन की यह पाबंदी लगाई गई थी कि अखबार पंजाब में फैली सांप्रदायिक गड़बड़ी के सम्बन्ध में कोई भी ऐसा बयान या रिपोर्ट प्रकाशित नहीं करेगा जो अधिकारिक अर्थात् सरकारी न हो। यह भी पाबंदी लगाई गई कि अखबार कोई भी ऐसी तसवीर, टिप्पणी, पत्र या ऐसी सामग्री प्रकाशित नहीं करेगा जो पंजाब में सांप्रदायिक गड़बड़ी से सम्बन्धित हो। इस सम्बंध में पंजाब सरकार के मुख्य सचिव द्वारा पंजाब के राज्यपाल के आदेश का हवाला देते हुए, 'खालसा समाचार' के मुद्रक, प्रकाशक और संपादक को आदेश जारी हुआ जो कि २७ मार्च, १९४७ ई. को प्रकाशित अखबार जिल्द ४८ के १६वें अंक के प्रथम पृष्ठ पर

प्रकाशित किया गया था। इसी जिल्द का १५वां अंक इससे पहले २७ फरवरी, १९४७ ई. को प्रकाशित हुआ अर्थात् २७ फरवरी, १९४७ ई. से तकरीबन ३० दिन बाद 'खालसा समाचार' निरंतरता में फिर २७ मार्च, १९४७ ई. को प्रकाशित हुआ, जब इस सम्बन्ध में अख़बार की तरफ से स्पष्ट किया गया है कि श्री अमृतसर साहिब में बने भय के माहौल के कारण छापाखाना ३ मार्च के बाद १५ दिन के बाद कुछ चलना शुरू हुआ तो इस सप्ताह का अखबार तैयार कर भेजा जा रहा है। इस पाबंदी के बावजूद भी 'खालसा समाचार' के २७ मार्च, १९४७ ई. को प्रकाशित अंक में बाखूबी श्री अमृतसर साहिब शहर में १९४७ ई. के मार्च महीने में घटित घटनाओं के तकरीबन हर ज़रूरी दिन के बारे में विवरण प्रकाशित किये हैं। इस दिन खालसा समाचार ने पृष्ठ २ और ३ पर 'पंजाब विच बेचैनी - सरकारी खबरां दा सार – मुड्ढ तो शीर्षकाधीन मार्च, १९४७ में राज्य में घटित घटनाओं के ज़रूरी विवरण 'द ट्रिब्यून', 'हिंदुस्तान टाइम्स', 'स्टेट्समैन' आदि अखबारों के हवालों से दिए हैं। स्टेट्समैन के हवाले से ६ मार्च के सम्बंध में लिखा है कि श्री अमृतसर साहिब में हालात बिगड़ गए। भारी लूटमार हुई। (अगले दिन) सेना भेजी गई और २ बजे से २४ घंटे के लिए कर्फ्यू लगा दिया गया, जिसने श्री अमृतसर साहिब में शान्ति कायम की। ६ मार्च की शाम तक २७ लोग मरे, ९० घायल हुए, आगजनी की घटनाओं द्वारा बिजली की तारें भी जल गईं।

'खालसा समाचार' में 'द ट्रिब्यून' की १२ मार्च, १९४७ ई. को प्रकाशित ख़बर के हवाले से छपा कि श्री अमृतसर साहिब में जो ५ से ६ मार्च को फ़सादियों ने तबाही मचायी, उतना जानी और माली नुकसान शायद किसी दुश्मन के हवाई हमले से भी न होता। शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी ने बताया है कि लगभग १८ हज़ार शरणार्थी लोगों को लंगर मिलता रहा और ११० मन आटा प्रतिदिन गुरु के लंगर में पकता रहा। अभी सैकड़ों परिवार बुंगों और श्री गुरु रामदास निवास में रह रहे हैं। मि. डीन सुप्रिंटेंडेट पुलिस श्री अमृतसर साहिब ने बताया कि मुसलिम स्त्रियों और बच्चों की एक भारी संख्या श्री दरबार साहिब सुरक्षा में रही और फिर मुसलिमों के सुरक्षा ठिकानों पर पहुंचाई गई। ऐसे केस भी हैं जहाँ मुसलिम हमसाया लोगों ने अपने हिंदू हमसाया लोगों की रक्षा की। ज़िक्र किया गया है कि बाज़ार हरचरन दास, कटरा घनईया, कूचा छज्जू मिस्त्र, हाल बाज़ार का कुछ हिस्सा, चौक फ़रीद, गली खोजियां, बाज़ार काठियां वाला, कूचा मोहर सिंघ, कणक मंडी, लोहगढ़, कटरा दूलो, कूचा देवी, नीवां शिवाला, गोल हट्टी, पच्छ वाला बाज़ार, रॉयल टॉकीज़, अमृत टॉकीज, डॉ. चुन्नी लाल चतरथ का मकान आदि इलाके जले हुए थे। अन्य इलाकों में भी कुछ घर जले। वे हैं— चौक परागदास, चौक फ़रीद, लोहगढ़ गेट के अंदरून चुरसती अटारी और कटरा मोहर सिंघ।

'खालसा समाचार' की रिपोर्टों से सम्बन्धित निष्कर्ष : यह अख़बार उस समय भाई महां सिंघ

ज्ञानी प्रिंटर और पब्लिशर एवं संपादक द्वारा वज़ीर हिंद प्रेस, हाल बाज़ार श्री अमृतसर साहिब से प्रकाशित होता था और कार्यालय खालसा समाचार हाल बाज़ार श्री अमृतसर साहिब से जारी होता था। यदि श्री हरिमंदर साहिब श्री दरबार साहिब पर मुसलिम लोग के लोगों द्वारा ६ से ९ मार्च, १९४७ ई. के दरमियान हमले जैसी कोई घटना घटित हुई होती तो 'खालसा समाचार' ने इस बारे में रिपोर्ट अवश्य प्रकाशित की होती, क्योंकि यह सिक्खों के केंद्रीय धर्म-स्थान से सम्बन्धित होनी थी। यह संभव नहीं कि श्री दरबार साहिब पर मुसलिम लीग के लोगों द्वारा किए गए बड़ी ख़बर छोड़ कर 'ख़ालसा समाचार' उस समय बाकी शहर के सभी प्रभावित बाज़ारों, इलाकों, कूचों आदि के विवरण नाम लिख कर जैसे प्रकाशित किए हैं, वैसे करता। यह अखबार सिक्खों का अपना अख़बार था और प्रकाशित भी श्री अमृतसर साहिब से ही होता था, इसलिए यह मानना मुश्किल है कि ऐसी आवश्यक घटना 'खालसा समाचार' प्रकाशित न करता। हाल बाज़ार श्री हरिमंदर साहिब श्री दरबार साहिब से लगभग एक किलोमीटर की दूरी पर स्थित है।

आरएसएस द्वारा २९ जनवरी, २००३ ई. को श्री अमृतसर साहिब में एक समारोह आयोजित कर १९४७ ई. में मुसलिम लीग के दंगाकारियों से श्री दरबार साहिब तथा हिंदुओं व सिक्खों को बचाने वाले स्वयंसेवकों को सम्मानित किया गया। इसके पश्चात् इस घटना की जाँच-पड़ताल करने के लिए 'संत सिपाही' पत्रिका द्वारा अपने जनवरी-फरवरी २००३ ई. अंक में पृष्ठ संख्या १५ पर मार्च १९४७ ई. की घटनाओं के गवाह के साथ बातचीत कर आरएसएस द्वारा सृजित किए गए गलत वृत्तांत की सच्चाई पेश की। यह तथ्य श्री अमृतसर साहिब निवासी स. महिताब सिंघ की पत्रिका में प्रकाशित गवाही से भी स्पष्ट होता है। सन् १९४७ में स. महिताब सिंघ, श्री अमृतसर साहिब में स्थित अंग्रेज़ों के लौइड बैंक में कर्मचारी थे, जिन्हें दंगों के समय कर्फ्यू-पास मिला हुआ था और वे मार्च १९४७ ई. में घटित घटनाओं के चश्मदीद थे। उनके हवाले से 'संत सिपाही' में ये तथ्य प्रकाशित हु हैं कि ४ मार्च, १९४७ ई. को हड़ताल हुई और ५ मार्च से छुरा मारने की इक्का-दुक्का वारदातें शुरू हो गईं। लाहौर, मुलतान, श्री अमृतसर साहिब, रावलपिंडी सभी हिंसा के घेरे में आ गए। ३ मार्च से १५ अगस्त, १९४७ ई. तक कोई मुसलिम हजूम कृष्णा मार्केट (श्री दरबार साहिब से ५०० मीटर दूर स्थित) तक नहीं आया। मार्च में कटरा जैमल सिंघ की दुकानें मुसलिम लीग के लोगों ने जलाईं। इस क्षेत्र में ज़्यादातर हिंदू दुकानदार थे। बड़े ज़ोर की अफ़वाह उड़ी कि मुसलिम लीग के लोग करमों ड्योढ़ी और गुरु बाज़ार लूटने आ रहे हैं। उस वक्त शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान जत्थेदार मोहन सिंघ नागोके के नेतृत्व में सिक्ख बाज़ार को बचाने निकल पड़े। उन्होंने बाज़ारों में मार्च किया और दुकानदारों में सुरक्षा - भावना जागृत की।

पश्चिमी बंगाल कलकत्ता से प्रकाशित एक

अहम रेफ्रेंस दस्तावेज़ 'द इंडियन एनुअल रजिस्टर', जिसमें भारत में समय-समय पर हुई घटनाएँ दर्ज हैं, के जनवरी- जून, १९४७ ई. के अंक में मार्च १९४७ में श्री दरबार साहिब पर हमले की घटना का कोई ज़िक्र नहीं है और न ही यहाँ आरएसएस के सेवकों की नियुक्ति के सम्बंध में कुछ लिखा है। इस दस्तावेज़ के अनुसार मास्टर तारा सिंघ ५ मार्च, १९४७ ई. को श्री अमृतसर साहिब थे और उन्होंने यहाँ से पाकिस्तान एवं मुसलिम लीग की शरारतों का विरोध करने वाले समूह दलों से ११ मार्च को पाकिस्तान विरोधी दिवस के तौर पर रोष प्रकट करने की अपील की।

इस दावे से सम्बन्धित शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के सिक्ख इतिहास रिसर्च बोर्ड से रिपोर्ट प्राप्त की गई है, जिससे भी स्पष्ट होता है कि आरएसएस से सम्बंधित यह वृत्तांत गलत है। श्री दरबार साहिब की सुरक्षा के लिए सिक्ख अपनी जान कुर्बान करने के लिए तत्पर रहते हैं। मार्च, १९४७ ई. भी जब गड़बड़ और हिंसा हुई तो भी बड़ी संख्या में सिक्ख श्री दरबार साहिब की सुरक्षा के लिए उपस्थित थे।

उपरोक्त सारी विचार-चर्चा से स्पष्ट होता है कि आरएसएस समर्थक लोगों द्वारा पैदा किया गया वृत्तांत सच्चाई से कोसों दूर है, जबकि सिक्खों द्वारा अपने मुकद्दस धार्मिक स्थान सचखंड श्री हरिमंदर साहिब श्री दरबार साहिब के लिए अपनी ज़िम्मेदारी समझते हुए कठिन समय में भी सेवा-संभाल की गई और यहाँ की मर्यादा को कायम रखा हुआ है।

फार्म–४, नियम–८

१.	प्रकाशित करने का स्थान	:	कार्यालय, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, श्री अमृतसर साहिब
२.	प्रकाशित करने का समय	:	प्रत्येक माह की सात तारीख
३.	मुद्रक का नाम	:	स. मनजीत सिंघ
	राष्ट्रीयता	:	भारतीय
	पता	:	सचिव, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, श्री अमृतसर साहिब
४.	प्रकाशक का नाम	:	स. मनजीत सिंघ
	राष्ट्रीयता	:	भारतीय
	पता	:	सचिव, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, श्री अमृतसर साहिब
५.	संपादक का नाम	:	स. सतविंदर सिंघ
	राष्ट्रीयता	:	भारतीय
	पता	:	संपादक, गुरमत ज्ञान शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, श्री अमृतसर साहिब
६.	मालिक	:	शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, श्री अमृतसर साहिब

मैं सतविंदर सिंघ घोषणा करता हूं कि उपरोक्त विवरण मेरी जानकारी के अनुसार पूर्णत: सही है।
तारीख-०७/०४/२०२५

हस्ताक्षर/-
(सतविंदर सिंघ)
संपादक, गुरमत ज्ञान।

खबरनामा

शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी ने दिल्ली के सिक्ख कत्लेआम के दोषी सज्जन कुमार को मिली सज़ा का किया स्वागत

श्री अमृतसर साहिब : २५ फरवरी : शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी ने दिल्ली सिक्ख कत्लेआम के दोषी सज्जन कुमार को मिली सज़ा का स्वागत किया है। मुख्यालय से जारी एक वक्तव्य में शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के मुख्य सचिव स. कुलवंत सिंघ मन्नण ने कहा कि इस फ़ैसले से चार दशक से इंसाफ़ की आशा में बैठे पीड़ित परिवारों को कुछ हद तक ढारस मिलेगा। उन्होंने कहा कि सन् १९८४ में हज़ारों सिक्खों का दारिंदगी के साथ कत्ल कर दिया गया। इस कत्लेआम का नेतृत्व सज्जन कुमार और जगदीश टाइटलर जैसे लोगों ने किया, जिनकी कांग्रेस पार्टी हमेशा पुश्तपनाही करती रही। उन्होंने कहा कि इस कत्लेआम के इंसाफ़ के लिए पीड़ित परिवारों ने ४० वर्ष से अधिक समय तक कानूनी लड़ाई लड़ी। उन्होंने कहा कि आशा की जा रही थी कि दोषियों को फांसी की सज़ा होगी, परन्तु उम्र-कैद की सज़ा सुनाई गई, जो उनके गुनाह के हिसाब से बहुत कम है। उन्होंने कहा कि शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी दोषियों को सख़्त सज़ा दिलाने के लिए भविष्य में भी कानूनी लड़ाई जारी रखेगी।

स. मन्नण ने सज्जन कुमार तथा सिक्ख कत्लेआम के अन्य दोषियों की पुश्तपनाही करने वाली कांग्रेस लीडरशिप पर सवाल करते हुए कहा कि सिक्ख कत्लेआम के दोषियों को उच्च पद देकर उन्हें सज़ा से बचाने का यत्न करने वालों की भूमिका के बारे में भी उच्च स्तरीय जांच होनी चाहिए, ताकि ऐसे दोषियों को भी सख़्त सज़ा मिल सके।

शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी ने सिकलीगर व बनजारा सिक्ख बच्चों की फ़ीस के लिए धनराशि आवंटित की

श्री अमृतसर साहिब : २८ फरवरी : शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी द्वारा विशाखापट्टनम (आंध्रा प्रदेश) में विभिन्न स्कूलों-कॉलेजों में शिक्षा प्राप्त कर रहे १०५ सिकलीगर व बनजारा सिक्ख बच्चों की सत्र २०२३-२४ की फ़ीस के लिए १६ लाख ७० हज़ार रुपए की धन राशि सम्बन्धित स्कूलों-कॉलेजों के प्रबंधकों को सौंपी गई। इससे पहले बीते दिनों धर्म प्रचार कमेटी की तरफ से रायपुर और छत्तीसगढ़ में भी सिकलीगर व बनजारा सिक्ख बच्चों की फ़ीस के लिए १३ लाख ४४ हज़ार रुपए की धनराशि आवंटित की गई थी। यह धनराशि शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के सदस्य भाई रजिंदर सिंघ महिता, स. सुरजीत सिंघ भिट्टेवड्ड, स. सुखवर्श सिंघ पन्नू और सचिव स. बलविंदर सिंघ काहलवां द्वारा प्रबंधकों को सौंपी गई है।

इस सम्बंध में बात करते हुए शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के सदस्य भाई रजिंदर सिंघ महिता ने कहा कि शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, धर्म के

प्रचार-प्रसार के अलावा सामाजिक कार्यों में भी हमेशा अग्रणी भूमिका निभाती आ रही है। पिछले कई वर्षों से सिकलीगर व बनजारा सिक्ख बच्चों को आत्मनिर्भर बनाने के लिए प्रत्येक वर्ष स्कूलों-कॉलेजों की फ़ीस अदा की जाती है। उन्होंने कहा कि शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी की तरफ से लिए गए निर्णय के अनुसार वर्ष भर की फ़ीस एक ही समय ख़ुद जाकर जमा करवाई जाती है। इस अवसर पर इंचार्ज स. गुरमीत सिंघ (शैणी), स. दिलशाह सिंघ आनंद और गुरुद्वारा इंस्पेक्टर स. मोहनदीप सिंघ भी उपस्थित थे।

ऋषिकेश में सिक्ख व्यापारी की मारपीट का

शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी ने लिया नोटिस, मुख्यमंत्री को लिखा पत्र

श्री अमृतसर साहिब : ३ मार्च : उत्तराखंड के ऋषिकेश में सिक्ख व्यापारी के साथ स्थानीय भीड़ द्वारा की गई मारपीट और उसके शोरूम को पहुँचाए गए नुकसान का सख़्त नोटिस लेते हुए शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी ने इस घटना की कड़ी निंदा की है और दोषी व्यक्तियों के ख़िलाफ़ सख़्त कार्यवाही की माँग की है।

शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के मुख्य सचिव स. कुलवंत सिंघ मन्नण ने इस घटना को लेकर उत्तराखंड के मुख्यमंत्री श्री पुष्कर धामी और उत्तराखंड पुलिस को दोषियों के ख़िलाफ़ सख़्त कार्यवाही करने के लिए ई-मेल पत्र भी भेजा है। उन्होंने कहा कि बीते दिनों घटी इस घटना की वायरल वीडियो से स्पष्ट हो रहा है कि भीड़ द्वारा सिक्ख व्यापारी के साथ मारपीट करने के साथ-साथ उसके शोरूम पर भी पत्थरबाजी करके उसे नुकसान पहुँचाया गया है। उन्होंने कहा कि भीड़ द्वारा सिक्ख व्यापारी की दसतार उतारी गई और उसके केशों का अपमान किया गया, इसलिए पुलिस दोषियों के ख़िलाफ़ दर्ज किये गए मुकद्दमे में धार्मिक भावनाओं को ठेस पहुंचाने की धारायें भी शामिल करे।

स. मन्नण ने कहा कि शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी द्वारा पीड़ित सिक्ख के साथ बातचीत की गई है और सिक्ख संस्था उसके साथ खड़ी है। उन्होंने कहा कि सिक्ख व्यापारी की तरफ से दी गई जानकारी के अनुसार इस घटना के पीछे स्थानीय कांग्रेसी पार्षद का हाथ है जो पिछले समय से इन सिक्ख व्यापारियों को तंग-परेशान भी करता आ रहा है। अपने पत्र में शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के मुख्य सचिव ने उत्तराखंड के मुख्यमंत्री से माँग की है कि वे राज्य की पुलिस को आदेश जारी करें कि इस घटना की निष्पक्ष जांच की जाए और दोषी व्यक्तियों की पहचान कर उन्हें तुरंत गिरफ़्तार किया जाए। उन्होंने सरकारों को समूचे देश में सिक्खों की सुरक्षा सुनिश्चित किए जाने के सम्बंध में भी कहा।

स. मन्नण ने यह भी कहा कि जल्द ही सिक्ख संस्था शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी का एक शिष्टमंडल पीड़ित सिक्खों व उत्तराखंड सरकार के अधिकारियों के साथ मुलाकात करेगा।

शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी द्वारा नववर्ष नानकशाही संवत् ५५७ के अवसर पर गुरुद्वारा श्री मँजी साहिब दीवान हाल में गुरमति समारोह आयोजित

श्री अमृतसर साहिब : १४ मार्च : शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी द्वारा नानकशाही संवत् ५५७ की आमद पर गुरुद्वारा श्री मँजी साहिब दीवान हाल में गुरमति समारोह आयोजित किया गया। श्री अखंड पाठ साहिब के भोग के पश्चात् सचखंड श्री हरिमंदर साहिब के हज़ूरी रागी भाई जगरूप सिंघ के रागी जत्थे ने गुरबाणी-कीर्तन किया। अरदास भाई बलविंदर सिंघ ने की और पवित्र हुकमनामा सचखंड श्री हरिमंदर साहिब के ग्रंथी सिंघ साहिब ज्ञानी बलजीत सिंघ ने श्रवण करवाया। ज्ञानी बलजीत सिंघ ने संगत को नव वर्ष की बधाई देते हुए गुरमति के अनुसार जीवन व्यतीत करने की प्रेरणा की।

नानकशाही संवत् ५५७ की आमद से सम्बन्धित बीती रात गुरुद्वारा श्री मँजी साहिब दीवान हाल में गुरमति समारोह आयोजित किया गया, जिसमें सचखंड श्री हरिमंदर साहिब के हज़ूरी रागी जत्थों ने गुरबाणी-कीर्तन किया और सिंघ साहिबान ने संगत को गुरु-इतिहास के साथ जोड़ा। समारोह के अवसर पर सचखंड श्री हरिमंदर साहिब के मुख्य ग्रंथी सिंघ साहिब ज्ञानी रघबीर सिंघ ने संगत को नववर्ष की बधाई दी। उन्होंने कहा कि गुरबाणी सिक्ख के जीवन का आधार है। सिक्ख को हमेशा गुरबाणी के दिशा-निर्देश में जीवन व्यतीत करना चाहिए। उन्होंने संगत को अमृत की दाति प्राप्त कर गुरु वाले बनने के लिए भी प्रेरित किया और कौम को नानकशाही कैलंडर के अनुसार दिवस, पर्व मनाने की अपील की।

इसी दौरान सिंघ साहिब ज्ञानी बलविंदर सिंघ ने विचार व्यक्त करते हुए संगत को बाणी और बाणे के साथ जुड़ने की प्रेरणा की। उन्होंने कहा कि प्रत्येक सिक्ख अपने घर में नानकशाही कैलंडर लगाए, ताकि हमारे बच्चे सिक्ख इतिहास के पर्व आदि से अवगत हो सकें। देर रात तक चले गुरमति समारोह में श्री दरबार साहिब के हज़ूरी रागी भाई गुरमेल सिंघ, शहीद सिक्ख मिशनरी कॉलेज के प्रोफ़ेसर डॉ. जतिंदर सिंघ के जत्थों ने संगत को गुरबाणी-कीर्तन श्रवण करवाया और ढाडी भाई गुरभेज सिंघ चविंडा, कवीशर भाई सतनाम सिंघ बद्दोवाल के जत्थों ने गुरु-इतिहास सुनाकर निहाल किया।

इस अवसर पर श्री अकाल तख़्त साहिब के मुख्य ग्रंथी ज्ञानी मलकीत सिंघ, पूर्व ग्रंथी ज्ञानी जसविंदर सिंघ, श्री दरबार साहिब के महाप्रबंधक स. भगवंत सिंघ धंगेड़ा, सुप्रिंटेंडेंट स. मलकीत सिंघ बहिड़वाल, अपर प्रबंधक स. इकबाल सिंघ मुखी, स. रजिंदर सिंघ रूबी, स. बिकरमजीत सिंघ झंगी, स. जसपाल सिंघ ढड्डे, स. युवराज सिंघ, उप प्रबंधक स. जसबीर सिंघ, स. अजै सिंघ आदि सहित संगत उपस्थित थी।

भक्त धंना जी

Registered with RNI at No. PUNHIN/2007/21665

Postal Registration No. L-1/PB-ASR/008/2023-25 Licensed to Post without Pre-Payment No. PB/R-001/2023-25

GURMAT GYAN

April 2025

DHARAM PARCHAR COMMITTEE,

Shiromani Gurdwara Parbandhak Committee, Sri Amritsar Sahib (PUNJAB)

गुरुद्वारा जन्म-स्थान श्री गुरु अंगद देव जी

गाँव सराय नागा, जिला श्री मुक्तसर साहिब

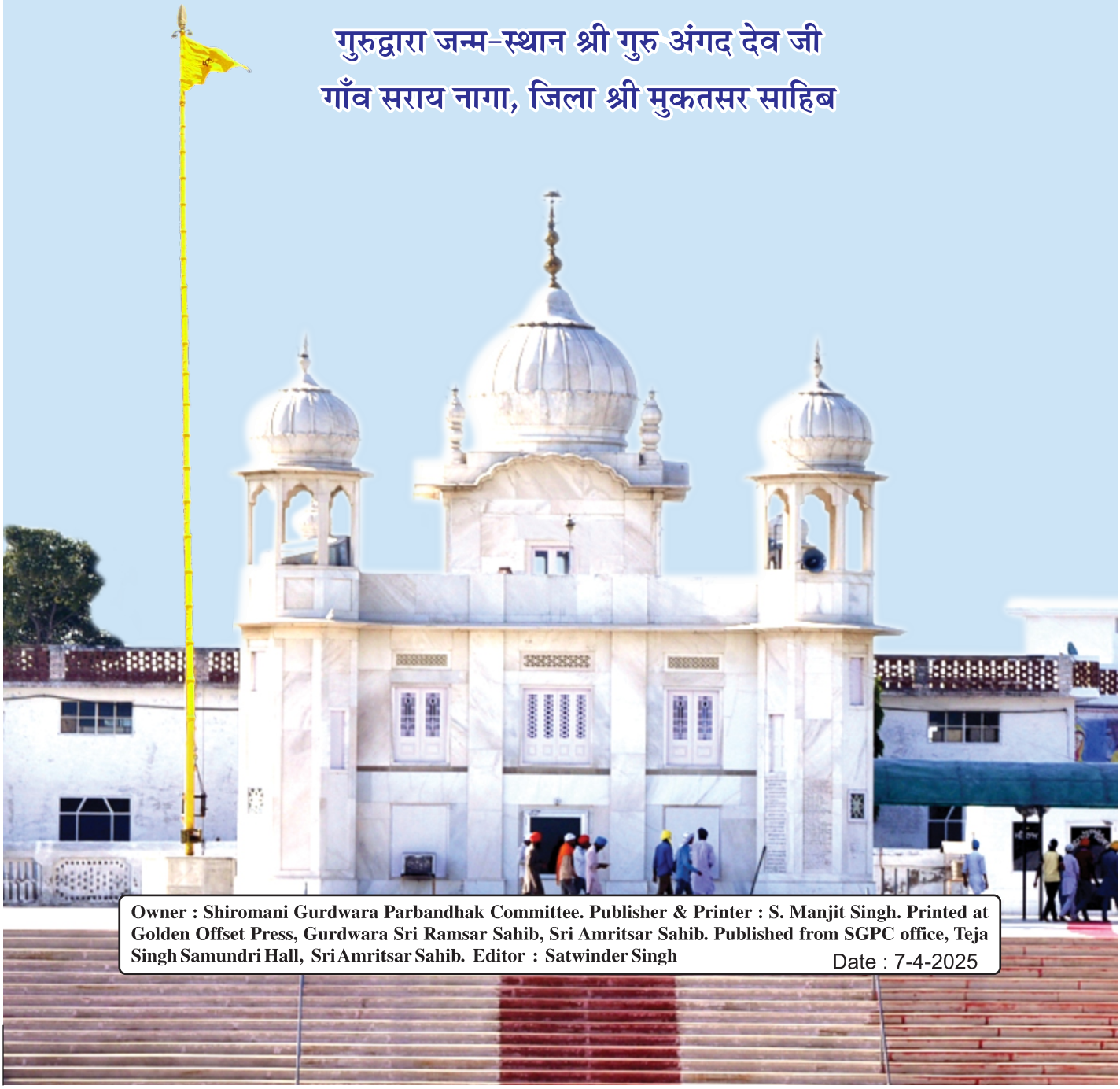

Owner : Shiromani Gurdwara Parbandhak Committee. Publisher & Printer : S. Manjit Singh. Printed at Golden Offset Press, Gurdwara Sri Ramsar Sahib, Sri Amritsar Sahib. Published from SGPC office, Teja Singh Samundri Hall, Sri Amritsar Sahib. Editor : Satwinder Singh

Date : 7-4-2025